Adda247 PUBLICATIONS

Exam Success

TRICKY BOOK

सफलता का रामबाण

CONCEPTS | FORMULAE | TRICKS | TIPS

- सामान्य ज्ञान
- सामान्य हिन्दी
- सामान्य अंग्रेजी

Useful For

- SSC (CGL, CHSL, MTS & GD)
- BANK (IBPS, SBI, RBI & NABARD)
- Defence & Paramilitary Exams
- Teaching Exams
- All State & Other Competitive Exams

Ashotush Sir Pawn Sir Pratibha Ma'am Atul Sir

SUBJECTWISE **CHAPTERWISE** **TOPICWISE**

विषय सूची

सामान्य ज्ञान

1. भारत का इतिहास ... 6
2. विश्व का भूगोल ... 20
3. भारत का भूगोल ... 26
4. भारतीय राजव्यवस्था ... 34
5. भारतीय अर्थव्यवस्था ... 41
6. सामान्य विज्ञान ... 45
7. परम्परागत सामान्य ज्ञान ... 51
8. खेल एवं पुरस्कार ... 58

सामान्य हिन्दी

1. हिन्दी व्याकरण : एक परिचय ... 62
2. वर्ण-विचार ... 62
3. वर्तनी ... 64
4. विराम-चिह्न ... 66
5. शब्द-विचार ... 69
6. संज्ञा ... 70
7. लिंग ... 71
8. वचन ... 75
9. कारक ... 76
10. सर्वनाम ... 78
11. विशेषण ... 80
12. क्रिया ... 82
13. काल ... 86
14. वाच्य ... 87
15. अव्यय या अविकारी शब्द ... 88
16. निपात ... 90
17. पद-परिचय ... 91
18. वाक्य-विचार ... 91
19. अन्वय ... 92
20. वाक्य-रचना में क्रम ... 94
21. वाक्य-विग्रह ... 95
22. वाक्य-परिवर्तन ... 96
23. वाक्य शुद्धि ... 97
24. उपसर्ग ... 99
25. प्रत्यय ... 100
26. संधि ... 104
27. समास ... 107
28. पुनरुक्ति ... 110
29. अनेकार्थक शब्द ... 111
30. एकार्थक शब्द ... 111
31. ऊनार्थक शब्द ... 111

CLICK HERE TO BUY BOOK

32. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द ... 112
33. विपरीतार्थक शब्द ... 112
34. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द ... 112
35. पर्यायवाची शब्द ... 112
36. एक शब्द का विभिन्न शब्द भेदों में प्रयोग ... 113
37. विशेष्य-विशेषण ... 113
38. वाणीय शब्द ... 113
39. व्याकरणिक शब्द ... 114
40. द्विसंकेत श्लेष ... 114
41. पदबंध ... 114
42. मुहावरे और लोकोक्तियाँ अथवा कहावतें ... 114
43. शब्द-शक्ति ... 115
44. रस ... 116
45. छंद ... 118
46. अलंकार ... 121
47. संक्षेपण ... 125

सामान्य अंग्रेजी

1. Alphabet ... 128
2. Sentence ... 128
3. Parts of Speech ... 130
4. Noun ... 130
5. Numbers ... 131
6. Gender ... 135
7. Case ... 135
8. Pronoun ... 137
9. Adjective ... 142
10. Verb ... 147
11. Subject-Verb Agreement ... 151
12. Auxiliary Verbs ... 157
13. Tense ... 161
14. Negative and Interrogative Sentence ... 170
15. Voice ... 172
16. Adverb ... 175
17. Preposition ... 180
18. Conjunction ... 183
19. Interjection ... 188
20. Narration ... 189
21. Phrases ... 193
22. Clauses ... 193
23. Determiners ... 197
24. Punctuation ... 201
25. Redundancy ... 203
26. Question-tag ... 203
27. Spellings ... 204
28. Word Formation ... 205-208

CLICK HERE TO BUY BOOK

सामान्य ज्ञान

अध्याय 1

भारत का इतिहास

Trick 1. *पुराना ऐब विदेशी धर्म (भारतीय इतिहास जानने के स्रोत)*

पुराना	⇒	पुरा	⇒	पुरातत्व संबंधी साक्ष्य
ऐब	⇒	ऐ	⇒	ऐतिहासिक ग्रंथ
विदेशी	⇒	विदेशी	⇒	विदेशियों का विवरण
धर्म	⇒	धर्म	⇒	धर्म ग्रंथ

संकेत प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी मुख्यत: चार स्रोतों से प्राप्त होती है—
1. पुरातत्व संबंधी साक्ष्य, 2. ऐतिहासिक ग्रंथ,
3. विदेशियों का विवरण, 4. धर्म ग्रंथ।

Trick 2. *सॉरी आया (चारों वेदों के नाम)*

सॉ	⇒	सा	⇒	सामवेद
री	⇒	ऋ	⇒	ऋग्वेद
आ	⇒	अ	⇒	अथर्ववेद
या	⇒	य	⇒	यजुर्वेद

संकेत वेदों की संख्या चार हैं, जो इस प्रकार हैं—1. ऋग्वेद, 2. सामवेद, 3. यजुर्वेद, 4. अथर्ववेद। इसमें सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है एवं सबसे बाद का वेद अथर्ववेद है। यजुर्वेद गद्य एवं पद्य वाला वेद है, जबकि सामवेद भारतीय संगीत का जनक है और अथर्ववेद रोग-निवारण, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, शाप, वशीकरण, प्रेम-विवाह आदि विषयों से संबंधित वेद है।

Trick 3. *अगाध आयु (चारों उपवेदों के नाम)*

अ	⇒	अ	⇒	अर्थशास्त्र
गा	⇒	गं	⇒	गंधर्ववेद
ध	⇒	ध	⇒	धनुर्वेद
आयु	⇒	आयु	⇒	आयुर्वेद

संकेत चार वेदों के अतिरिक्त सभी के एक-एक उपवेद भी हैं, जो निम्न हैं—
1. आयुर्वेद (ऋग्वेद), 2. गंधर्ववेद (सामवेद),
3. धनुर्वेद (यजुर्वेद), 4. अर्थशास्त्र (अथर्ववेद)।

Trick 4. *निज छवि शिशु (छ: वेदांगों के नाम)*

नि	⇒	नि	⇒	निरूक्त
ज	⇒	ज	⇒	ज्योतिष
छ	⇒	छ	⇒	छन्द
वि	⇒	ठ	⇒	व्याकरण
शि	⇒	शि	⇒	शिक्षा
शु	⇒	सू	⇒	सूत्र

संकेत वैदिक काल के अन्त में वेदों को ठीक से समझने के लिए वेदांगों की रचना की गई, जिनकी संख्या छ: हैं—
1. निरूक्त, 2. ज्योतिष,
3. छन्द, 4. शिक्षा,
5. व्याकरण, 6. सूत्र।

Trick 5. *कौए पांच-सात जैम गोते (सातों ब्राह्मण ग्रंथों के नाम)*

कौ	⇒	कौ	⇒	कोषितिकी
ए	⇒	ऐ	⇒	ऐतरेय
पांच	⇒	पंच	⇒	पंचविश
सात	⇒	शत	⇒	शतपथ
जैम	⇒	जैम	⇒	जैमनीय
गो	⇒	गो	⇒	गोपथ
ते	⇒	तै	⇒	तैत्तरेय

संकेत ऋषियों द्वारा गद्य रूप में की गई वेदों की व्याख्या 'ब्राह्मण ग्रंथ' कहलाती है। प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण ग्रंथ हैं। ये ब्राह्मण ग्रंथ निम्न हैं—ऐतरेय एवं कौषितिकी (ऋग्वेद); पंचविश, षडविश एवं जैमनीय (सामवेद); शतपथ (शुक्ल यजुर्वेद); तैत्तरेय (कृष्ण यजुर्वेद); गोपथ (अथर्ववेद)।

Trick 6. *रामवाक महाव्यास (महाकाव्य और उनके रचयिता)*

राम	⇒	रामा	⇒	रामायण
वाक	⇒	वा	⇒	वाल्मीकि
महा	⇒	महा	⇒	महाभारत
व्यास	⇒	व्यास	⇒	व्यास

संकेत प्राचीन भारत में दो प्रमुख महाकाव्यों की रचना हुई—रामायण एवं महाभारत। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की तथा महाभारत की रचना महर्षि व्यास ने की। महाभारत को जय संहिता के नाम से भी जाना जाता है।

Trick 7. *एक प्रश्न श्वेत वृहत मुछ कौन (कुछ प्रमुख उपनिषदों के नाम)*

ए	⇒	ऐ	⇒	ऐतरेयोपनिषद्
क	⇒	क	⇒	कठोपनिषद्
प्रश्न	⇒	प्रश्न	⇒	प्रश्नोपनिषद्
श्वेत	⇒	श्वेत	⇒	श्वेताश्वरोपनिषद्
वृहद	⇒	वृहद	⇒	वृहदारण्यकोपनिषद्
मु	⇒	मु	⇒	मुण्डकोपनिषद्
छ	⇒	छ	⇒	छान्दोग्योपनिषद्
कौन	⇒	कैनो	⇒	कैनोपनिषद्

संकेत उपनिषदों में आत्मा-परमात्मा एवं सम्पूर्ण विश्व के प्रचलित दार्शनिक विचारों का संकलन है। उपनिषदों की कुल संख्या 108 है, जिसमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं—ऐतरेयोपनिषद् (ऋग्वेद); वृहदारण्यकोपनिषद् (यजुर्वेद); ईशोपनिषद् (शुक्ल यजुर्वेद); कठोपनिषद्, श्वेताश्वरोपनिषद् (कृष्ण यजुर्वेद); छान्दोग्योपनिषद्, कैनोपनिषद् (सामवेद); प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् (अथर्ववेद)। मुण्डकोपनिषद् से ही 'सत्यमेव जयते' राष्ट्रीय चिह्न में लिया गया है।

Trick 8. *सुन्दर बालक उत्तर अयोध्या के अरण्य में युद्ध की (रामायण के सातों काण्डों के नाम)*

सुन्दर	⇒	सुन्दर	⇒	सुन्दरकाण्ड
बालक	⇒	बाल	⇒	बालकाण्ड
उत्तर	⇒	उत्तर	⇒	उत्तरकाण्ड
अयोध्या	⇒	अयोध्या	⇒	अयोध्याकाण्ड
अरण्य	⇒	अरण्य	⇒	अरण्यकाण्ड
युद्ध	⇒	युद्ध	⇒	युद्धकाण्ड
की	⇒	कि	⇒	किष्किन्धाकाण्ड

संकेत बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण सात काण्डों में बंटा हुआ है, जो इस प्रकार हैं—
1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड,
3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किन्धाकाण्ड,

CLICK HERE TO BUY BOOK

Trick 105.

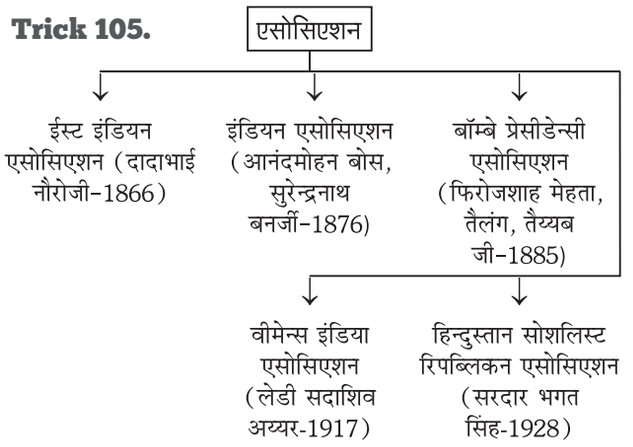

Trick 106.

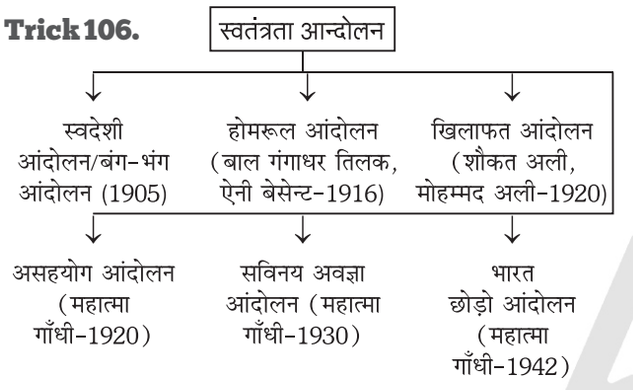

अध्याय 2

विश्व का भूगोल

Trick 1. *बशपम बशअव (सूर्य से दूरी के आधार पर ग्रहों का क्रम)*

ब	⇒	बु	⇒	बुध
श	⇒	शु	⇒	शुक्र
प	⇒	पृ	⇒	पृथ्वी
म	⇒	मं	⇒	मंगल
ब	⇒	बृ	⇒	बृहस्पति
श	⇒	श	⇒	शनि
अ	⇒	अ	⇒	अरूण
व	⇒	व	⇒	वरूण

संकेत अस्तित्वमान द्रव्य एवं ऊर्जा को सम्मिलित रूप से ब्रह्माण्ड (Universe) कहते हैं। सूर्य और उसके चारों ओर गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण, परिक्रमा करने वाले ग्रहों, उपग्रहों, धूमकेतु, उल्काएँ, पुच्छल तारे एवं नीहारिकाएँ आदि को संयुक्त रूप से सौरमण्डल कहा जाता है। सूर्य की परिक्रमा करनेवाले प्रकाशरहित आकाशीय पिण्डों को ग्रह कहते हैं। सौरमण्डल में कुल आठ ग्रह हैं। सूर्य से बढ़ते हुए दूरी के क्रम में ये ग्रह हैं—बुध (Mercury), शुक्र (Venus), पृथ्वी (Earth), मंगल (Mars), बृहस्पति (Jupiter), शनि (Saturn), अरूण (Uranus), वरूण (Neptune)।

Trick 2. *बशअव पशमब (आकार के आधार पर ग्रहों का क्रम)*

ब	⇒	बृ	⇒	बृहस्पति
श	⇒	श	⇒	शनि
अ	⇒	अ	⇒	अरूण
व	⇒	व	⇒	वरूण
प	⇒	पृ	⇒	पृथ्वी
श	⇒	शु	⇒	शुक्र
म	⇒	मं	⇒	मंगल
ब	⇒	बु	⇒	बुध

संकेत आकार के अनुसार आठों ग्रहों का घटता क्रम इस प्रकार है—बृहस्पति, शनि, अरूण, वरूण, पृथ्वी, शुक्र, मंगल, बुध।

Trick 3. *बशपम (आंतरिक ग्रहों के नाम)*

ब	⇒	बु	⇒	बुध
श	⇒	शु	⇒	शुक्र
प	⇒	पृ	⇒	पृथ्वी
म	⇒	मं	⇒	मंगल

संकेत पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य से निकटतम ग्रह को आंतरिक ग्रह कहते हैं। आंतरिक ग्रह ये हैं—बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल।

Trick 4. *बशअव (बाह्य ग्रहों के नाम)*

ब	⇒	बृ	⇒	बृहस्पति
श	⇒	श	⇒	शनि
अ	⇒	अ	⇒	अरूण
व	⇒	व	⇒	वरूण

संकेत पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य से दूरस्थ ग्रह को बाह्य ग्रह कहते हैं। बाह्य ग्रह ये हैं—बृहस्पति, शनि, अरूण, वरूण।

Trick 5. *अरुण व वरुण हरा, तो मंगल लाल;*
पृथ्वी नीला, तो बृहस्पति पीला;
शनि काला, तो शुक्र चमकीला। (प्रमुख ग्रहों के उपनाम)

अरूण	⇒	अरूण	⇒	अरूण ग्रह
वरूण	⇒	वरूण	⇒	वरूण ग्रह
हरा	⇒	हरा	⇒	हरा
तो	⇒	×	⇒	×
मंगल	⇒	मंगल	⇒	मंगल ग्रह
लाल	⇒	लाल	⇒	लाल
पृथ्वी	⇒	पृथ्वी	⇒	पृथ्वी ग्रह
नीला	⇒	नीला	⇒	नीला
तो	⇒	×	⇒	×
बृहस्पति	⇒	बृहस्पति	⇒	बृहस्पति ग्रह
पीला	⇒	पीला	⇒	पीला
शनि	⇒	शनि	⇒	शनि ग्रह
काला	⇒	काला	⇒	काला
तो	⇒	×	⇒	×
शुक्र	⇒	शुक्र	⇒	शुक्र ग्रह
चमकीला	⇒	चमकीला	⇒	चमकीला

संकेत शुक्र ग्रह को 'पृथ्वी का जुड़वाँ ग्रह' कहते हैं। शुक्र को 'भोर का तारा' (Morning Star), 'सांझ का तारा' (Evening Star) तथा चमकीला ग्रह कहते हैं। पृथ्वी को जल की उपस्थिति के कारण 'नीला ग्रह' कहते हैं। मंगल ग्रह को मिट्टी में लौह ऑक्साइड पाया जाता है, जिससे इसका रंग लाल दिखता है। इस

CLICK HERE TO BUY BOOK

Trick 62.

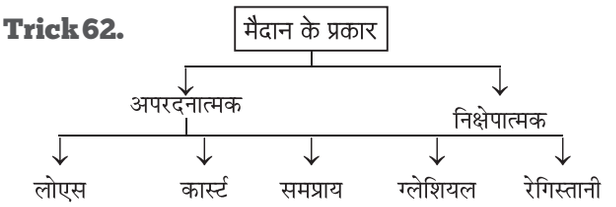

Trick 63.

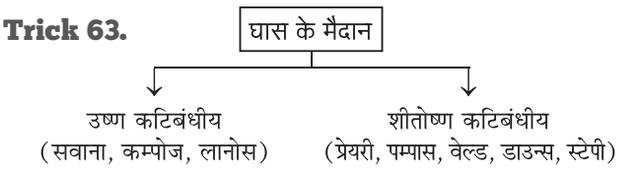

Trick 64.

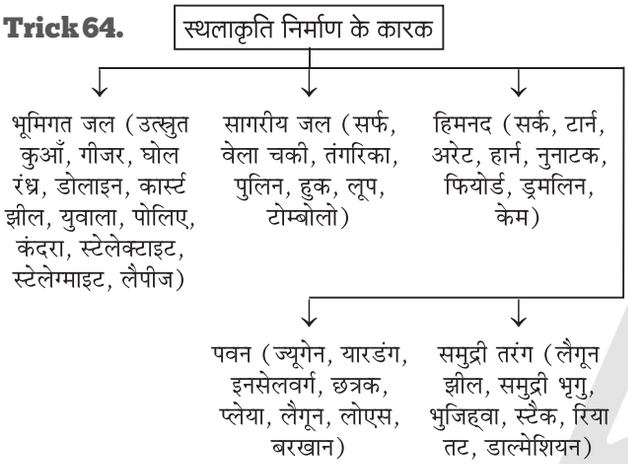

Trick 65.

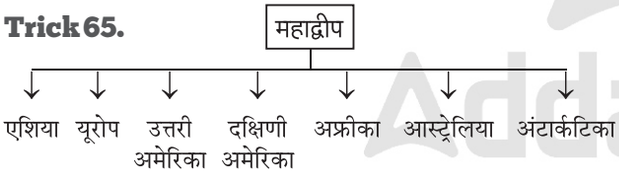

Trick 66.

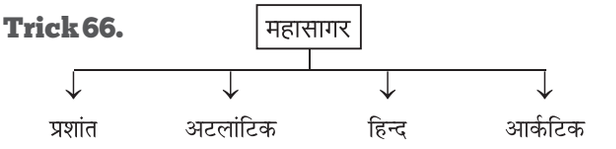

Trick 67.

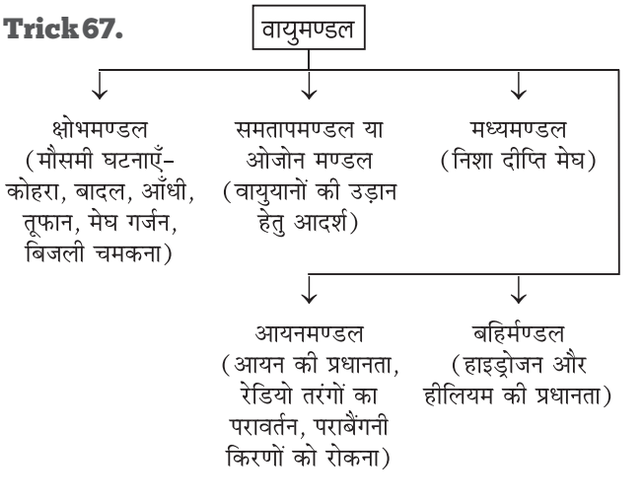

Trick 68.

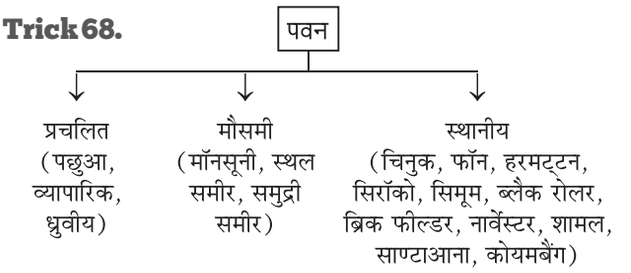

Trick 69.

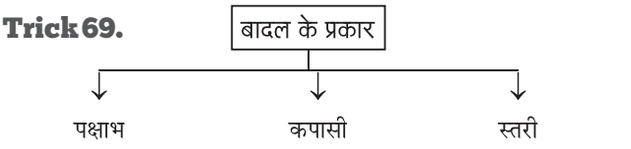

अध्याय 3
भारत का भूगोल

Trick 1. *रागो (भारत का सबसे बड़ा तथा सबसे छोटा राज्य)*

रा ⇒ रा ⇒ राजस्थान
गो ⇒ गो ⇒ गोवा

संकेत भारत का सम्पूर्ण भू-भाग उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। इसका विस्तार 8°4′ उत्तरी अक्षांश से 37°6′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 68°7′ पूर्वी देशांतर से 97°25′ पूर्वी देशान्तर तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी है। भारतीय भू-भाग की उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 3214 किमी है तथा पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 2933 किमी है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान है तथा सबसे छोटा राज्य गोवा है।

Trick 2. *मित्र पर गमछा झार (कर्क रेखा पर स्थित भारत के राज्य)*

मि ⇒ मि ⇒ मिजोरम
त्र ⇒ त्रि ⇒ त्रिपुरा
प ⇒ प ⇒ पश्चिम बंगाल
र ⇒ र ⇒ राजस्थान
ग ⇒ गु ⇒ गुजरात
म ⇒ म ⇒ मध्य प्रदेश
छा ⇒ छ ⇒ छत्तीसगढ़
झार ⇒ झार ⇒ झारखण्ड

संकेत कर्क रेखा (23½° उत्तरी अक्षांश) भारत को लगभग दो बराबर हिस्सों में बाँटते हुए आठ राज्यों (गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा तथा मिजोरम) से गुजरती है। 82½° पूर्वी देशांतर इलाहाबाद के निकट नैनी से होकर गुजरती है तथा भारतीय मानक समय (IST) का निर्धारण करती है। भारतीय मानक समय (IST) ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5.5 घंटे आगे है।

Trick 3. *मामी (8° चैनल)*

मा ⇒ मा ⇒ मालदीव
मी ⇒ मि ⇒ मिनिकॉय द्वीप

संकेत मालदीव व मिनिकॉय द्वीप के मध्य 8° चैनल गुजरती है।

CLICK HERE TO BUY BOOK

अध्याय 4

भारतीय राजव्यवस्था

Trick 1. *भीम, गोपाल कृष्ण कन्हैया माधव को लेकर मोहम्मद साहब के खेत पर गये। (संविधान के प्रारूप समिति के सदस्य)*

भीम	⇒	डॉ० भीमराव अम्बेडकर
गोपाल	⇒	एन० गोपाल स्वामी आयंगर
कृष्ण	⇒	अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर
कन्हैया	⇒	कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी
माधव	⇒	एन० माधव राव
को लेकर	⇒	×
मोहम्मद	⇒	सैय्यद मोहम्मद सादुल्ला
साहब के	⇒	×
खेत	⇒	डी० पी० खेतान
पर गये	⇒	×

संकेत कैबिनेट मिशन की संस्तुतियों के आधार पर भारतीय संविधान की निर्माण करनेवाली संविधान सभा का गठन जुलाई, 1946 ई० में किया गया। बी० एन० राव द्वारा तैयार किए गए संविधान के प्रारूप पर विचार-विमर्श करने के लिए संविधान सभा द्वारा 29 अगस्त 1947 ई० को एक संकल्प पारित करके प्रारूप समिति का गठन किया गया तथा इसके अध्यक्ष के रूप में डॉ० भीमराव अम्बेडकर को चुना गया। प्रारूप समिति के सदस्यों की संख्या सात थी, जो इस प्रकार हैं—1. डॉ० भीमराव अम्बेडकर (अध्यक्ष), 2. एन० गोपाल स्वामी आयंगर, 3. अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर, 4. कन्हैया लाल मणिकलाल मुंशी, 5. सैय्यद मोहम्मद सादुल्ला, 6. एन० माधव राव (बी० एल० मित्र के स्थान पर), 7. डी० पी० खेतान (1948 ई० में इनकी मृत्यु के बाद टी० टी० कृष्णमाचारी को सदस्य बनाया गया)।

Trick 2. *जापानी विधि (भारतीय के संविधान में जापान के संविधान से लिए गए तत्व)*

जापानी	⇒	जापान
विधि	⇒	विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया

संकेत भारत के संविधान के निर्माण में विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया जापान के संविधान से लिए गए हैं।

Trick 3. *वित्तीय आपात की स्थिति में मौलिक अधिकार का प्रयोग कर राष्ट्रपति पर महाभियोग लगाकर अमेरिका भेज दो। (भारत के संविधान में संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से लिए गए तत्व)*

वित्तीय आपात	⇒	वित्तीय आपात
की स्थिति में	⇒	×
मौलिक अधिकार	⇒	मौलिक अधिकार
का प्रयोग कर	⇒	×
राष्ट्रपति पर महाभियोग	⇒	राष्ट्रपति पर महाभियोग
लगाकर	⇒	×
अमेरिका	⇒	संयुक्त राज्य अमेरिका
भेज दो	⇒	×

संकेत भारत के संविधान के निर्माण में मौलिक अधिकार, न्यायिक पुनरावलोकन, संविधान की सर्वोच्चता, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, निर्वाचित राष्ट्रपति एवं उस पर महाभियोग, उपराष्ट्रपति, उच्चतम एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों को हटाने की विधि एवं वित्तीय आपात संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से लिए गए हैं।

Trick 4. *ब्रिटेन की संसद की एक विधि (भारत के संविधान में ब्रिटेन के संविधान से लिए गए तत्व)*

ब्रिटेन	⇒	ब्रिटेन
की	⇒	×
संसद	⇒	संसदात्मक शासन प्रणाली
की	⇒	×
एक	⇒	एकल नागरिकता
विधि	⇒	विधि निर्माण प्रक्रिया

संकेत भारत के संविधान निर्माण में ब्रिटेन के संविधान से संसदात्मक शासन प्रणाली, एकल नागरिकता तथा विधि निर्माण प्रक्रिया लिए गए हैं।

Trick 5. *आयरलैण्ड की निर्वाचक नीति द्वारा आपात लागू की गयी (भारत के संविधान में आयरलैण्ड के संविधान से लिए गए तत्व)*

आयरलैण्ड	⇒	आयरलैण्ड
की	⇒	×
निर्वाचक व्यवस्था	⇒	राष्ट्रपति निर्वाचक मंडल की
नीति	⇒	नीति निर्देशक सिद्धान्त
द्वारा	⇒	×
आपात	⇒	आपातकालीन उपबन्ध
लागू की गयी	⇒	×

संकेत भारत के संविधान निर्माण में आयरलैण्ड के संविधान से नीति निर्देशक सिद्धान्त; राष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल की व्यवस्था; राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा में साहित्य, कला, विज्ञान तथा समाज-सेवा इत्यादि के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त व्यक्तियों का मनोनयन, आपातकालीन उपबन्ध लिए गए हैं।

Trick 6. *आस्ट्रेलिया में सम प्रस्तावना पास कर केन्द्र व राज्य के बीच के संबंध को सुधारा गया। (भारत के संविधान में आस्ट्रेलिया के संविधान से लिए गए तत्व)*

आस्ट्रेलिया	⇒	आस्ट्रेलिया
में	⇒	×
सम	⇒	समवर्ती सूची का प्रावधान
पास कर	⇒	×
केन्द्र व राज्य के बीच संबंध	⇒	केन्द्र व राज्य के बीच संबंध एवं शक्तियों का विभाजन
को सुधारा गया	⇒	×

संकेत भारत के संविधान निर्माण में आस्ट्रेलिया के संविधान से प्रस्तावना की भाषा, समवर्त्ती सूची का प्रावधान, केन्द्र एवं राज्य के बीच संबंध तथा शक्तियों का विभाजन लिए गए हैं।

Trick 7. *जर्मनी ने आपातकाल से प्रवर्तन के दौरान राष्ट्रपति को मौलिक अधिकार दिया। (भारत के संविधान में जर्मनी के संविधान से लिए गए तत्व)*

जर्मनी	⇒	जर्मनी
ने	⇒	×

CLICK HERE TO BUY BOOK

संकेत मनुष्य के शरीर के किसी भी अंग में, त्वचा से लेकर अस्थि तक, यदि कोशिका वृद्धि अनियंत्रित हो, तो इसके परिणामस्वरूप कोशिकाओं में अनियमित गुच्छा बन जाता है, इन अनियमित कोशिकाओं के गुच्छे को कैंसर कहते हैं। कैंसर मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं—1. कार्सीनोमास, 2. लिम्फोमास, 3. सार्कोमास, 4. ल्यूकीमियास।

Trick 45. *सावस (प्रोटीन के प्रकार)*

सा	⇒	सं	⇒	संयुग्मी प्रोटीन
व	⇒	व्यु	⇒	व्युत्पन्न प्रोटीन
स	⇒	स	⇒	सरल प्रोटीन

संकेत प्रोटीन शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जे० बर्जेलियस ने किया था। यह एक जटिल कार्बनिक यौगिक है, जो 20 अमीनो अम्लों से मिलकर बनता है। ऊर्जा उत्पादन एवं शरीर की मरम्मत दोनों कार्यों के लिए प्रोटीन उत्तरदायी होता है। प्रोटीन मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं—संयुग्मी प्रोटीन, व्युत्पन्न प्रोटीन, सरल प्रोटीन।

Trick 46. *मेघ हज (थाइरॉक्सिन की कमी से होने वाले रोग)*

मे	⇒	मि	⇒	मिक्सिडमा
घ	⇒	घे	⇒	घेंघा
ह	⇒	हा	⇒	हाइपोथाइरॉयडिज्म
ज	⇒	ज	⇒	जड़मानवता

संकेत थाइरॉक्सिन की कमी से मानव शरीर में होनेवाले कुछ प्रमुख रोग निम्न हैं—मिक्सिडमा, घेंघा (Goitre), हाइपोथाइरॉयडिज्म (Hypothyroidism), जड़ मानवता (Cretinism)। थाइरॉक्सिन की आधिक्य से टॉक्सिक ग्वाइटर (Toxic Goitre) तथा एक्सौंप्थैलमिया (Exophthalmia) रोग होता है।

Trick 47. *मूगा चुश (जड़ वाले प्रमुख सब्जियाँ)*

मू	⇒	मू	⇒	मूली
गा	⇒	गा	⇒	गाजर
चु	⇒	चु	⇒	चुकन्दर
श	⇒	श	⇒	शलजम

संकेत जड़ वाले प्रमुख सब्जियाँ निम्न हैं—मूली, गाजर, चुकन्दर, शलजम।

Trick 48. *आबाम अटक मिख (वास्तविक फल)*

आ	⇒	आ	⇒	आम
बा	⇒	बा	⇒	बादाम
म	⇒	म	⇒	मक्का
अ	⇒	अ	⇒	अंगूर
ट	⇒	ट	⇒	टमाटर
क	⇒	के	⇒	केला
मि	⇒	मि	⇒	हरी मिर्च
ख	⇒	खी	⇒	खीरा

संकेत कुछ फल केवल अंडाशय (Ovary) से विकसित होते हैं और उन्हें यथार्थ या वास्तविक फल (True Fruit) कहते हैं। जैसे—आम, बादाम, मक्का, अंगूर, टमाटर, केला, हरी मिर्च, खीरा।

Trick 49. *सेक (असत्य फल)*

से	⇒	से	⇒	सेब
क	⇒	क	⇒	कटहल

संकेत कुछ फलों के निर्माण में बाह्य दलपुंज, दलपुंज या पुष्पासन आदि भाग लेते हैं, ऐसे फलों को असत्य फल (False Fruit) कहते है। जैसे—सेब, कटहल आदि।

Trick 50. *अर्द्ध असम (कोशिका विभाजन)*

अर्द्ध	⇒	अर्द्ध	⇒	अर्द्धसूत्री विभाजन
अ	⇒	अ	⇒	असूत्री विभाजन
सम	⇒	सम	⇒	समसूत्री विभाजन

संकेत कोशिका विभाजन को सर्वप्रथम 1855 ई० में विरचाऊ ने खोजा। कोशिका का विभाजन मुख्यत: तीन प्रकार से होते हैं—असूत्री विभाजन (Amitosis), समसूत्री विभाजन (Mitosis) एवं अर्द्धसूत्री विभाजन (Meiosis)।

Trick 51.

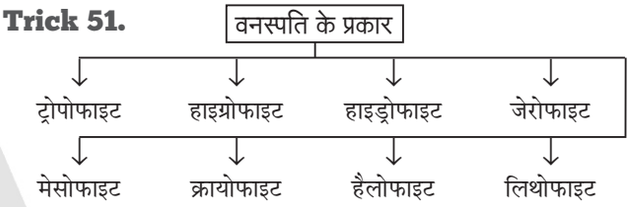

Trick 52.

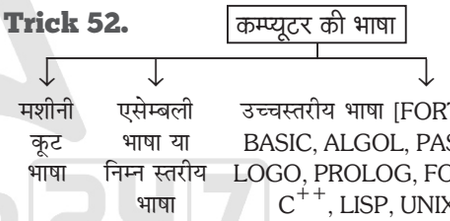

Trick 53.

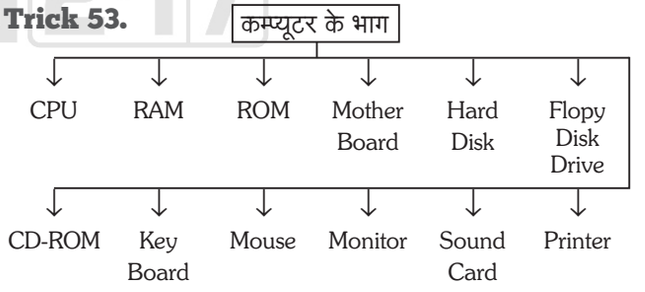

अध्याय 7
परम्परागत सामान्य ज्ञान

Trick 1. *अफ चार अस (संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रमुख भाषाएँ)*

अ	⇒	अ	⇒	अंग्रेजी
फ	⇒	फ्रें	⇒	फ्रेंच
चा	⇒	ची	⇒	चीनी
र	⇒	र	⇒	रसियन
अ	⇒	अ	⇒	अरबी
स	⇒	स्प	⇒	स्पेनिश

CLICK HERE TO BUY BOOK

संकेत संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO)की स्थापना 24 अक्टूबर, 1945 ई० को हुई थी। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क शहर में स्थित है। संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्य करने वाली भाषा दो हैं—अंग्रेजी और फ्रेंच। अन्य भाषाएँ, जिन्हें राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त हैं—चीनी, रसियन, अरबी तथा स्पेनिश।

Trick 2. *आमस प्रअस (संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग)*

आ	⇒	आ	⇒	आर्थिक एवं सामाजिक परिषद्
म	⇒	म	⇒	महासभा
स	⇒	सु	⇒	सुरक्षा परिषद्
प्र	⇒	प्र	⇒	प्रन्यास परिषद्
अ	⇒	अ	⇒	अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय
स	⇒	स	⇒	सचिवालय

संकेत संयुक्त राष्ट्र संघ के निम्न छः अंग हैं—1. महासभा (General Assembly), 2. सुरक्षा परिषद् (Security Council), 3. आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् (Economic and Social Council), 4. प्रन्यास परिषद् (Trusteeship), 5. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (International Court of Justice), 6. सचिवालय (Secretariat)। नीदरलैण्ड्स में हेग स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के अतिरिक्त सभी अंग संयुक्त राष्ट्र संघ के न्यूयॉर्क स्थित मुख्यालय में हैं।

Trick 3. *ब्रिअरू चीफ (सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य)*

ब्रि	⇒	ब्रि	⇒	ब्रिटेन
अ	⇒	अ	⇒	अमेरिका
रू	⇒	रू	⇒	रूस
ची	⇒	ची	⇒	चीन
फ	⇒	फ्रा	⇒	फ्रांस

संकेत सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य अंग है और एक प्रकार से कार्यपालिका है। इसमें 15 सदस्य होते हैं, जिनमें 5 स्थायी सदस्य और 10 अस्थायी सदस्य हैं। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन—ये पाँच स्थायी सदस्य हैं तथा अस्थायी सदस्यों का निर्वाचन महासभा अपने दो-तिहाई बहुमत से दो वर्षों के लिए करती है।

Trick 4. *त्रिएंटो (संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव)*

त्रि	⇒	त्रिग्वेली
एंटो	⇒	एंटोनियोगुटेरेश

संकेत संयुक्त राष्ट्र संघ के सचिवालय का प्रमुख महासचिव होता है, जिसे महासभा द्वारा सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर 5 वर्ष की अवधि के लिए नियुक्त किया जाता है। प्रथम महासचिव त्रिग्वेली थे तथा वर्तमान में पुर्तगाल के एंटोनियो गुटेरेश हैं।

Trick 5. *थाइफिसिम (आसियान के संस्थापक देश)*

था	⇒	था	⇒	थाईलैण्ड
इ	⇒	इ	⇒	इण्डोनेशिया
फि	⇒	फि	⇒	फिलीपीन्स
सि	⇒	सि	⇒	सिंगापुर
म	⇒	म	⇒	मलेशिया

संकेत आसियान (ASEAN) का पूरा नाम दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संघ (Association of South-East Asian Nations) है। इसकी स्थापना 8 अगस्त, 1967 ई० को हुई। उस समय इण्डोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड ने इसका गठन किया था। वर्तमान में इसके सदस्य देशों की संख्या 10 हो गई है। इसका केन्द्रीय सचिवालय जकार्ता (इण्डोनेशिया) में है।

Trick 6. *पबन अमल भूभाग (सार्क के सदस्य देश)*

प	⇒	पा	⇒	पाकिस्तान
ब	⇒	बां	⇒	बांग्लादेश
न	⇒	ने	⇒	नेपाल
अ	⇒	अ	⇒	अफगानिस्तान
म	⇒	मा	⇒	मालदीव
ल	⇒	लं	⇒	श्रीलंका
भू	⇒	भू	⇒	भूटान
भाग	⇒	भार	⇒	भारत

संकेत सार्क (SAARC) का पूरा नाम दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (The South Asian Association for Regional co-operation) है। इसकी स्थापना 7-8 दिसम्बर 1985 ई० में की गयी थी। इसका मुख्यालय काठमाण्डू में है। इसके सदस्य देश हैं—भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव एवं अफगानिस्तान। चीन और म्यांमार इसके सदस्य देश नहीं हैं।

Trick 7. *अक जबरू इजाफा (जी-8 के सदस्य देश)*

अ	⇒	अ	⇒	अमेरिका
क	⇒	क	⇒	कनाडा
ज	⇒	ज	⇒	जर्मनी
ब	⇒	ब्रि	⇒	ब्रिटेन
रू	⇒	रू	⇒	रूस
इ	⇒	इ	⇒	इटली
जा	⇒	जा	⇒	जापान
फा	⇒	फ्रां	⇒	फ्रांस

संकेत जी-8 (Group-8) की स्थापना 22 सितम्बर, 1985 ई० को न्यूयॉर्क में की गयी थी। इसके सदस्य देश हैं—कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान, इटली एवं रूस।

Trick 8. *जले में बिकले में कैले (थल सेना के कमीशण्ड ऑफीसरों की पद श्रेणियाँ)*

ज	⇒	ज	⇒	जनरल
ले	⇒	ले	⇒	लेफ्टिनेंट जनरल
मे	⇒	मे	⇒	मेजर जनरल
बि	⇒	ब्रि	⇒	ब्रिगेडियर
क	⇒	क	⇒	कर्नल
ले	⇒	ले	⇒	लेफ्टिनेंट कर्नल
मे	⇒	मे	⇒	मेजर
कै	⇒	कै	⇒	कैप्टन
ले	⇒	ले	⇒	लेफ्टिनेंट

संकेत भारत की रक्षा के लिए सेना का गठन किया गया है, जिसका सर्वोच्च सेनापति भारत का राष्ट्रपति होता है। भारतीय सशस्त्र सेनाओं को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा गया है—थल सेना, वायु सेना तथा जल सेना। थल सेना के कमीशण्ड ऑफीसरों की पद

CLICK HERE TO BUY BOOK

का ⇒ का ⇒ कायाकल्प
गबन ⇒ गबन ⇒ गबन

संकेत प्रेमचन्द की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—प्रेम पचीसी, प्रेम प्रसून, प्रेम द्वादशी, प्रेमाश्रम, प्रेम तीर्थ, प्रेम प्रतिज्ञा, प्रेम पंचगी, प्रेम पूर्णिमा, मानसरोवर, सोज-ए-वतन, निर्मला, कफन, कर्मभूमि, कायाकल्प, सेवा सदन, रंगभूमि, गोदान, गबन आदि।

Trick 51.

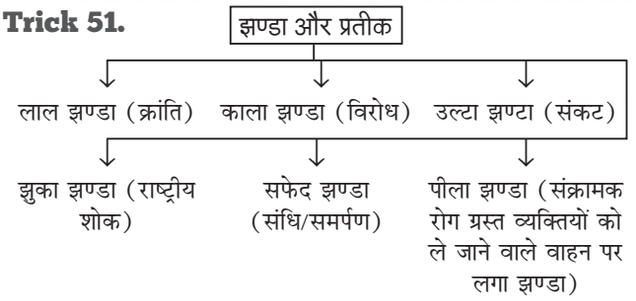

Trick 52.

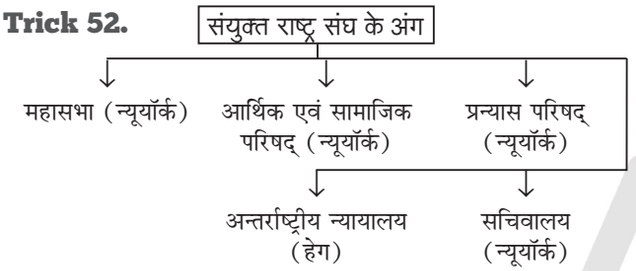

Trick 53 .

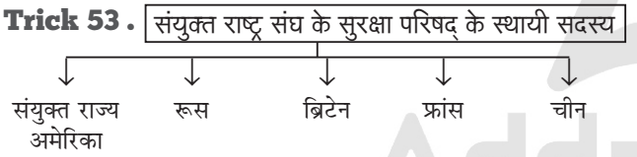

अध्याय 8
खेल एवं पुरस्कार

Trick 1. *सिअफो (ओलम्पिक के उद्देश्य)*

सि ⇒ सि ⇒ सिटियस
अ ⇒ अ ⇒ अल्टियस
फो ⇒ फो ⇒ फोर्टियस

संकेत सन् 1897 में फादर डिडोन द्वारा रचित सिटियस (Citius), अल्टियस (Altius), फोर्टियस (Fortius) लैटिन में ओलम्पिक के उद्देश्य हैं, जिनका अर्थ है—तेज, ऊँचा और बलवान। इसको ओलम्पिक के उद्देश्य के रूप में पहली बार 1920 ई० में एंटवर्प (बेल्जियम) ओलम्पिक खेलो में प्रस्तुत किया गया।

Trick 2. *नीप पीया काका हया लाका (ओलम्पिक प्रतीक)*

नी ⇒ नी ⇒ नीला गोला
प ⇒ प ⇒ यूरोप
पी ⇒ पी ⇒ पीला गोला
या ⇒ या ⇒ एशिया
का ⇒ का ⇒ काला गोला
का ⇒ का ⇒ अफ्रीका
ह ⇒ ह ⇒ हरा
या ⇒ या ⇒ ऑस्ट्रेलिया
ला ⇒ ला ⇒ लाल
का ⇒ का ⇒ अमेरिका

संकेत ओलम्पिक प्रतीक में अलग-अलग रंगों के पाँच गोले (छल्ले) एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं—इनका रंग क्रमश: नीला, पीला, काला, हरा एवं लाल होता है। ये पाँचों रंग के गोले निम्न महाद्वीपों को दर्शाते हैं—1. नीला गोला—यूरोप, 2. पीला गोला—एशिया, 3. काला गोला—अफ्रीका, 4. हरा गोला—ऑस्ट्रेलिया, 5. लाल गोला—अमेरिका।

Trick 3. *8 बीजिंग के, 12 लंदन के तथा 16 रियो के ओलम्पिक खिलाड़ी 20 वर्ष की उम्र में टोक्यो गये। (ओलम्पिक खेल का आयोजन)*

8 ⇒ 8 ⇒ 2008
बीजिंग ⇒ बीजिंग ⇒ बीजिंग ओलम्पिक
के ⇒ × ⇒ ×
12 ⇒ 12 ⇒ 2012
लंदन ⇒ लंदन ⇒ लंदन ओलम्पिक
के ⇒ × ⇒ ×
16 ⇒ 16 ⇒ 2016
रियो ⇒ रियो-डी-जेनेरो ⇒ रियो-डी-जेनेरो
के ओलम्पिक खिलाड़ी ⇒ ×
20 ⇒ 20 ⇒ 2020
वर्ष की उम्र में ⇒ ×
टोक्यो ⇒ टोक्यो ⇒ टोक्यो
गये ⇒ ⇒ ×

संकेत प्राचीन ओलम्पिक खेल यूनान के ओलम्पिया शहर में 776 ईसा पूर्व में प्रारम्भ हुआ था। पहली बार यह खेल ग्रीक देवता ज्यूस के सम्मान में खेला गया था। आधुनिक ओलम्पिक खेलों का प्रारम्भ 1896 ई० को फ्रांस के बैरोन पियरे डि कोबार्टिन के प्रयासों से यूनान के एथेंस शहर में हुआ। इसका आयोजन प्रत्येक चार वर्ष के अंतराल पर किया जाता है। वर्ष 2008 में यह खेल बीजिंग (चीन) में, वर्ष 2012 में लंदन (ब्रिटेन) में, वर्ष 2016 में यह खेल रियो-डी-जेनेरो (ब्राजील) में तथा 2020 में टोक्यो (जापान) में आयोजित हुआ था। यह खेल वर्ष 2024 में पेरिस (फ्रांस) में तथा वर्ष 2028 में लॉस एंजिलस (अमेरिका) में आयोजित होंगे।

Trick 4. *10 नई दिल्ली के, 14 ग्लासगो के तथा 18 गोल्डकोस्ट के राष्ट्रमण्डल खिलाड़ी 22 में बर्मिंघम गये। (राष्ट्रमण्डल खेल का आयोजन)*

10 ⇒ 10 ⇒ 2010
नई दिल्ली ⇒ नई दिल्ली ⇒ नई दिल्ली
के तथा ⇒ × ⇒ ×
14 ⇒ 14 ⇒ 2014
ग्लासगो ⇒ ग्लासगो ⇒ ग्लासगो
के राष्ट्रमण्डल खिलाड़ी ⇒ ×
18 ⇒ 18 ⇒ 2018
गोल्डकोस्ट ⇒ गोल्डकोस्ट ⇒ गोल्डकोस्ट
22 ⇒ 22 ⇒ 2022
बर्मिंघम ⇒ बर्मिंघम ⇒ बर्मिंघम
गये ⇒ × ⇒ ×

संकेत राष्ट्रमण्डल खेलों की शुरूआत 1930 ई० में हेमिल्टन (कनाडा) में हुई थी। राष्ट्रमण्डल खेल की कल्पना सन् 1891 में एक अंग्रेज जे० ए० कपूर ने की थी। वर्ष 2010 में यह खेल नई दिल्ली (भारत) में, 2014 में ग्लासगो (स्कॉटलैण्ड) में, 2018 में गोल्डकोस्ट (आस्ट्रेलिया) में, तथा वर्ष 2022 में बर्मिंघम (इंग्लैण्ड) में आयोजित हुआ।

CLICK HERE TO BUY BOOK

सामान्य हिन्दी

अध्याय 1
हिन्दी व्याकरण : एक परिचय

Tips 1. हिन्दी व्याकरण—जिस विधा के द्वारा किसी भाषा का ठीक-ठीक पढ़ना-लिखना आ जाए, उसे 'व्याकरण' कहते हैं। 'हिन्दी व्याकरण' से हिन्दी भाषा का ठीक-ठीक लिखना और बोलना आ जाता है। हिन्दी व्याकरण को निम्न खण्डों में बाँटा जा सकता है :

1. वर्ण विचार
2. शब्द विचार
3. वाक्य विचार
4. शब्द रचना
5. शब्द रूप
6. पदबंध
7. मुहावरे
8. लोकोक्तियाँ
9. शब्द शक्ति
10. रस
11. छन्द
12. अलंकार
13. संक्षेपण

अध्याय 2
वर्ण-विचार

Tips 1. वर्ण—वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खंड न हो सके। जैसे—अ, उ, क्, ख् आदि। 'हरि' शब्द में मुख्यत: दो ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं—(1) ह और (2) रि। यदि ध्यानपूर्वक इनपर विचार किया जाए, तो इनके भी दो-दो खंड हो सकते हैं। 'ह' में 'ह्' और 'अ' दो ध्वनियाँ हैं। इसी प्रकार 'रि' में भी 'र' और 'इ' दो ध्वनियाँ हैं। इन ह्, अ, र्, इ ध्वनियों का हम खंड नहीं कर सकते, अत: ये मूल ध्वनियाँ हैं। इन्हें ही वर्ण कहते हैं। वर्ण को अक्षर भी कहते हैं। यानी, जो क्षर न हों, अर्थात् जिनका विनाश न हो, वे अक्षर हैं।

Tips 2. वर्णमाला—वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में कुल 46 वर्ण हैं।

इनके दो भेद हैं—(1) स्वर और (2) व्यंजन।

Tips 3. स्वर-वर्ण—'स्वर' उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से होता है, परंतु जो व्यंजन वर्णों के उच्चारण में सहायक होते हैं।

हिन्दी में 13 स्वर हैं—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ।

Tips 4. स्वर-वर्ण के भेद—इसका विभाजन निम्न दो आधारों पर किया जाता है

I. कालमान के अनुसार स्वर मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं—(1) ह्रस्व और (2) दीर्घ। जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उसे 'ह्रस्व' कहते हैं। 'दीर्घ' वह स्वर है, जिसके उच्चारण में अधिक समय लगता है।

अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ह्रस्व-स्वर हैं और आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं। इन्हीं दीर्घ स्वरों में ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर हैं, जो क्रमश: 1. अ + इ, अ + ई, आ + इ, आ + ई; 2. अ + ए, आ + ए; 3. अ + उ, आ + उ, आ + ऊ; 4. अ + ओ, अ + औ के मिलने से बनते हैं।

II. जाति के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं—

1. सजातीय या सवर्ण—अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ के युग्म आपस में एक-दूसरे के सजातीय या 'सवर्ण' माने जाते हैं। सजातीय इसलिए कि युग्म के दोनों वर्ण ह्रस्व-दीर्घ का जो भी अंतर रखें, पर वे आपस में एक ही उच्चारण के ढंग, एक ही उच्चारण-प्रयत्न के हैं।

2. विजातीय या असवर्ण—अ-ई, अ-उ, आ-इ, आ-ऊ, इ-ऋ, उ-ॠ आदि आपस में असवर्ण हैं, विजातीय हैं; क्योंकि ये आपस में दो उच्चारण ढंग के और दो उच्चारण-प्रयत्न के हैं।

Tips 5. स्वरों के उच्चारण—स्वरों के उच्चारण कई प्रकार से हो सकते हैं—निरनुनासिक, अनुनासिक, सानुस्वार तथा विसर्गयुक्त।

1. **निरनुनासिक**—अभी, आधार, इच्छा आदि।
2. **अनुनासिक**—आँव, आँचल, उँगली आदि।
   इनमें स्वरों के ऊपर चन्द्रबिंदु (ँ) का प्रयोग होता है।
3. **सानुस्वार**—अंग, ईंट आदि।
   इनमें स्वरों के ऊपर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होता है।
4. **विसर्गयुक्त**—अन्त: करण, पय:पान आदि।
   इसमें स्वरों के बाद विसर्ग (:) का प्रयोग होता है।

Tips 6. व्यंजन-वर्ण—'व्यंजन' उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं हो सकता है। इनकी संख्या 33 हैं—

क ख ग घ ङ।
च छ ज झ ञ।
ट ठ ड ढ ण।
त थ द ध न।
प फ ब भ म।
य र ल व श ष स ह।

इन वर्णों में उच्चारण की सुविधा के लिए 'अ' स्वर मिला दिया गया है। इनके शुद्ध रूप क्, ख्, ग्, घ् आदि हैं।

नोट—व्यंजन को 'हल्' भी कहते हैं। यह व्यंजनों का संस्कृत नाम है। स्वररहित व्यंजन लिखने के लिए उसके नीचे ऊपर जो लकीर लगी दिखायी गयी है, उसे भी 'हल्' कहते हैं। स्वररहित व्यंजन, अर्थात् हल् चिह्न लगे व्यंजन ही शुद्ध व्यंजन हैं; अत: शुद्ध व्यंजनों को 'हल्' कहा जाता है।

Tips 7. अनुस्वार और विसर्ग—अनुस्वार और विसर्ग मात्रा की भाँति हैं। जैसे—आ (ा), इ (ि) की मात्रा व्यंजनों में मिला देते हैं, उसी प्रकार अनुस्वार और विसर्ग की मात्रा को भी स्वर और व्यंजन दोनों में मिला देते हैं; यथा—अं-अ: तथा कं-क:। कुछ विद्वानों ने इन्हें व्यंजन माना है। पंडित कामता प्रसाद गुरु के अनुसार, "व्यंजनों में दो वर्ण होते हैं, जिन्हें अनुस्वार और विसर्ग कहते हैं। अनुस्वार का चिह्न (ं) है और विसर्ग का (:)। जैसे—अनुस्वार अं, विसर्ग अ: इत्यादि। इन दोनों व्यंजनों की विशेषता यह है कि अन्य (व्यंजन) स्वर के पहले आते हैं; परंतु ये उसके (स्वर के) बाद आते हैं।"

संयुक्त वर्ण क्ष, त्र, ज्ञ—कुछ विद्वानों ने क्ष, त्र, ज्ञ को भी मूल व्यंजन-ध्वनि मान लिया है। क्—ष के योग से क्ष, त्—र के योग से त्र और ज्—ञ के योग से ज्ञ का निर्माण हुआ है; अतएव ये संयुक्त ध्वनियाँ हैं, इन्हें मूल ध्वनि मानना उचित नहीं है।

तल बिंदुवाले वर्ण—ड़, ढ़ आदि कुछ हिन्दी शब्दों में ड, ढ के नीचे और फारसी-अरबी शब्दों में अ, क, ख, ग, ज, फ के नीचे तथा कुछ अँगरेजी शब्दों में ज तथा फ के नीचे लोग बिंदु (तल बिंदु) लगा देते हैं।

CLICK HERE TO BUY BOOK

इन भाषाओं के शब्दों के प्रयोग में भी अशुद्धियाँ होती रहती हैं। हिन्दी के मानक रूप का विकास करने की दृष्टि से शब्दों की अशुद्धियों का ज्ञान अत्यावश्यक है। हिन्दी के शब्द लेखन में की जाने वाली कुछ आम गलतियाँ अर्थात् वर्तनी-संबंधी अशुद्धियाँ कुछ निम्न हैं—

1. अ-आ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अकाश	आकाश	अलपीन	आलपीन
अगामी	आगामी	अवाज	आवाज
अर्यावर्त	आर्यावर्त	अविष्कार	आविष्कार

2. इ-ई संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आशिर्वाद	आशीर्वाद	पत्नि	पत्नी
इद	ईद	पिढ़ी	पीढ़ी
इश्वर	ईश्वर	पुत्रि	पुत्री
इसाई	ईसाई	प्रतिक	प्रतीक
गोदावरि	गोदावरी	प्राणि	प्राणी
जिरा	जीरा	बिमार	बीमार
तिर्थ	तीर्थ	शताब्दि	शताब्दी
तुलसिदास	तुलसीदास	शिर्षक	शीर्षक
दिपिका	दीपिका	हिंग	हींग

3. ई-इ-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अतीथी	अतिथि	आशीष	आशिष
आखीर	आखिर	ईंजन	इंजन
कालीदास	कालिदास	परिणती	परिणति
कीर्ती	कीर्ति	पाकीस्तान	पाकिस्तान
कुटीया	कुटिया	पुष्टी	पुष्टि
गीनना	गिनना	बहुब्रीही	बहुब्रीहि

4. ऋकार-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
रिगवेद	ऋग्वेद	रितु	ऋतु
रिच्छ	ऋच्छ	रिधि	ऋद्धि
रिणी	ऋणी	रिषि	ऋषि

5. अनुस्वार-चन्द्रविंदु-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आंख	आँख	कांपना	काँपना
उंगली	उँगली	गांधी	गाँधी
ऊंघना	ऊँघना	गूंगा	गूँगा
ऊंचा	ऊँचा	गूंज	गूँज
छांह	छाँह	बांह	बाँह
झांसी	झाँसी	भूंकना	भूँकना
टांगना	टाँगना	महंगा	महँगा
डांट	डाँट	मुंह	मुँह
दांत	दाँत	सांझ	साँझ
पांख	पाँख	सांप	साँप
बांझ	बाँझ	अँकुर	अंकुर
बांध	बाँध	गँगा	गंगा

6. छ-क्ष-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आकांछा	आकांक्षा	छेम	क्षेम
छत्रिय	क्षत्रिय	छोभ	क्षोभ
छन	क्षण	नछत्र	नक्षत्र
छमा	क्षमा	रच्छा	रक्षा
छय	क्षय	लछुमन	लक्ष्मण
छीण	क्षीण	संछेप	संक्षेप

7. ज-य-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अजोध्या	अयोध्या	जाचना	याचना
जदि	यदि	जुवती	युवती
जम	यम	जुवा	युवा
जमुना	यमुना	जोग	योग

8. र-ड़-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उमरना	उमड़ना	पापर	पापड़
करोर	करोड़	पीरा	पीड़ा
कराही	कड़ाही	पेरा	पेड़ा
किवार	किवाड़	भेर	भेड़
कीचर	कीचड़	भेरिया	भेड़िया

9. र-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
करमनाशा	कर्मनाशा	बृज	ब्रज
परयाग	प्रयाग	मात्रिभूमि	मातृभूमि
प्रंतु	परन्तु	मिरच	मिर्च
परत्येक	प्रत्येक	रामचन्दर	रामचंद्र

10. श-स-ष-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अभिसेक	अभिषेक	दुस्कर	दुष्कर
आविस्कार	आविष्कार	दसमी	दशमी
असोक	अशोक	निसाद	निषाद
कलस	कलश	भीस्म	भीष्म
कुसल	कुशल	वास्प	वाष्प
कैलाश	कैलास	विसम	विषम
कोशी	कोसी	विसमता	विषमता
कौसल्या	कौशल्या	शुनसान	सुनसान
जमसेदपुर	जमशेदपुर	समसान	श्मशान
तास	ताश	सुसमा	सुषमा

11. संयुक्ताक्षर-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंतरयामी	अंतर्यामी	प्रारथना	प्रार्थना
इसलाम	इस्लाम	ब्रम्हपुत्र	ब्रह्मपुत्र
उस्का	उसका	ब्राम्हण	ब्राह्मण
चिन्ह	चिह्न	महातमा	महात्मा
जयचन्द्र	जयचंद	विस्मर्ण	विस्मरण
द्रष्टी	दृष्टि	शत्रुहन	शत्रुघ्न
धयान	ध्यान	संग्या	संज्ञा
प्रतेक	प्रत्येक	सुन्द्र	सुन्दर

CLICK HERE TO BUY BOOK

Tips 14. लाघव-चिह्न (०)—जहाँ पूरा शब्द लिखना अभिप्रेत न हो, वहाँ उस शब्द के आरम्भिक अक्षर के पश्चात् लाघव-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

डाकघर	— डा० घ०	जिला	— जि०
तिथि	— ति०	तारीख	— ता०

उपाधियों के संक्षिप्तीकरण के लिए भी लाघव-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

पीएच० डी०, डी० लिट०

Tips 15. तारक-चिह्न (*)—यदि किसी विषय के बारे में विशेष सूचना या निर्देश देना हो, तो उसके ऊपर तारक-चिह्न लगा दिया जाता है और फिर पृष्ठ के अधोभाग में रेखा के नीचे फिर तारक-चिह्न लगाकर उसका विवरण दिया जाता है। जैसे—

रामायण* हमारे देश में अत्यंत लोकप्रिय ग्रन्थ है।

* रामायण से हमारा तात्पर्य गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामायण से है।

Tips 16 त्रुटि-चिह्न (^)—अक्षर, पद, पदांश या वाक्य के छूट जाने पर छूटे अंश को उस वाक्य के ऊपर लिखने के लिए वाक्य के उस अंश के नीचे त्रुटि-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

रोटी

राम ने ^ खायी।

Tips 17. योग-चिह्न (+)—दो या अधिक शब्दों को जोड़ने में योग-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी व्याकरण के सन्धि-प्रकरण में इस चिह्न का सर्वाधिक प्रयोग होता है। जैसे—

राम + अयन = रामायण

विद्या + आलय = विद्यालय

Tips 18. तुल्यतासूचक-चिह्न (=)—समानता सूचित करने के लिए तुल्यतासूचक चिह्न का प्रयोग होता है। हिन्दी व्याकरण के सन्धि प्रकरण और समास में इस चिह्न का सर्वाधिक प्रयोग होता है। जैसे—

ज्ञान + अभाव = ज्ञानाभाव	कन्या का दान = कन्यादान
धर्म + आत्मा = धर्मात्मा	सेना का नायक = सेनानायक

Tips 19. रेखिका-चिह्न (—)—किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द या शब्दों पर विशेष ध्यान दिलाने के लिए रेखिका-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

दुर्योधन ने कहा—"मैं पांडवों को सुई की नोक-भर भी जमीन नहीं दूँगा।"

Tips 20. निर्देश-चिह्न (—)—निर्देश-चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित अवस्थाओं में होता है—

(1) वाक्य के बीच जब कोई स्वतंत्र पद वाक्यांश या वाक्य आ जाय, तो उसके दोनों ओर निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

यह औषधि—जहाँ तक मुझे विश्वास है—लाभकारी होगी।

(2) एक वक्ता के कथन को उद्धृत करने के पूर्व निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

ध्रुवस्वामिनी—मेरा स्त्रीत्व क्या इतने का भी अधिकारी नहीं कि अपने को स्वामी समझनेवाला पुरुष उसके लिए प्राणों का पण लगा सके?

रामगुप्त—तुम सुन्दर हो, ओह, कितनी सुन्दर; किंतु सोने की कटार पर मुग्ध होकर उसे कोई अपने हृदय में डुबो नहीं सकता।

(3) किसी बात पर बल देने या विवरण देने में निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

कपड़ा बिलकुल उजला धुला था—दपादप।

(4) समानार्थक शब्द के पहले निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

मेरी मंशा—उद्देश्य था कि आप मेरे दल में सम्मिलित हो जाएँ।

(5) किसी उच्चारण के पहले निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

गीता का कथन है—"कर्तव्य करना हमारा अधिकार है, फल की चिन्ता नहीं।"

(6) अकस्मात् रुकावट या भावपरिवर्तन की स्थिति में निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

मैं—मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर सकूँगा।

(7) लेख, उद्धरण, पुस्तक या लेखक के नाम के पहले निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छाई।

दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आई।। —जयशंकर प्रसाद

(8) परस्पर-संबद्ध शब्दों को एक साथ मिलाकर लिखने में निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

क्विंटल—किलोग्राम—ग्राम

15-04-2015

(9) शेरों में कहीं-कहीं विराम के बदले निर्देश-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

तेरी-उल्फत की चिनगारी ने जालिम एक जहाँ फूँका।

इधर चमकी—उधर सुलगी—यहाँ फूँका, वहाँ फूँका।

अध्याय 5
शब्द-विचार

Tips 1. शब्द—एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। जैसे—मैं, तू, लड़का, छोटा, वह इत्यादि।

Tips 2. शब्दों का वर्गीकरण—शब्दों का वर्गीकरण मुख्यत: चार आधारों पर किया जाता है—

I. अर्थ के आधार पर—अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं—(1) सार्थक और (2) निरर्थक।

(1) सार्थक—जिनसे किसी अर्थ का ज्ञान होता है, वे सार्थक शब्द हैं। जैसे—राम, श्याम, चम्मच, सीधा आदि।

(2) निरर्थक—जिनसे किसी अर्थ का ज्ञान नहीं होता, उनके शब्दों को निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे—टल्ल, कल्ल आदि।

II. रचना के आधार पर—रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं—(1) रूढ़, (2) यौगिक और (3) योगरूढ़।

(1) रूढ़—रूढ़ शब्द वे हैं, जिनका कोई भी खंड सार्थक नहीं होता और जो परम्परा से किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—घर, बरतन आदि। 'घर' शब्द के यदि दो भाग किये जाएँ, तो पहला 'घ' होगा और दूसरा 'र'। इन दोनों भागों का, अलग-अलग रहने पर, कोई अर्थ नहीं होता। अत:, इस तरह के शब्द रूढ़ कहे जाते हैं।

(2) यौगिक—उन शब्दों को यौगिक कहते हैं, जिनके खंडों का अर्थ होता है। जैसे—देवमंदिर, विद्यालय, विद्यार्थी आदि। 'देवमंदिर' के दो खंड हैं—देव और मंदिर। दोनों खंडों के अलग-अलग अर्थ हैं। इसी तरह विद्या + आलय = विद्यालय और विद्या + अर्थी = विद्यार्थी शब्द भी यौगिक है।

(3) योगरूढ़—उन शब्दों की संज्ञा योगरूढ़ है, जिनके खंड सार्थक हों, परंतु जो शब्द खंड-शब्दों से निकलने वाले अर्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करते हों। जैसे—पंकज = पंक + ज = पंक से उत्पन्न होने वाला।

CLICK HERE TO BUY BOOK

2. अधिक प्रेम, घृणा आदि प्रकट करने के लिए स्त्रीलिंग 'ई' के बदले 'इया' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुतिया	बाछा	बछिया
बूढ़ा	बुढ़िया	दादा	ददिया

3. पशु-पक्षीबोधक अकारांत पुंलिंग शब्दों में 'नी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—मोर-मोरनी, सिंह-सिंहनी, शेर-शेरनी, हंस-हंसनी, ऊँट-ऊँटनी।
4. बहुत-से अकारांत संस्कृत शब्दों के अंत में आकार लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—पण्डित-पण्डिता, बाल-बाला, महाशय-महाशया।
5. जिन संस्कृत शब्दों के अंत में 'अक' प्रत्यय हो, उन्हें स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'अक' के स्थान पर 'इका' का प्रयोग करते हैं। जैसे—पाठक-पाठिका, बालक-बालिका, शिक्षक-शिक्षिका, गायक-गायिका।
6. उपनामबोधक पुंलिंग शब्दों के अंत में 'आइन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग-रूप बनाया जाता है। जैसे—पंडित-पंडिताइन, ओझा-ओझाइन, लाला-ललाइन, ठाकुर-ठकुराइन, चौबे-चौबाइन, पँडि-पंडाइन।
7. व्यवसायवाचक पुंलिंग शब्दों के अंतिम स्थान पर 'इन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—ठठेरा-ठठेरिन, जुलाहा-जुलाहिन, धोबी-धोबिन, जमादार-जमादारिन, सुनार-सुनारिन, लुहार-लुहारिन, तेली-तेलिन, कुँजड़ा-कुँजड़िन।
8. कुछ शब्दों में 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—मेहतर-मेहतरानी, सेठ-सेठानी, देवर-देवरानी, नौकर-नौकरानी।
9. कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग रूप बिलकुल भिन्न होता है। जैसे—पिता-माता, भाई-बहन, वर-वधू, साहब-मेम, पुरुष-स्त्री, बैल-गाय, मियाँ-बीबी, पुत्र-कन्या।

अध्याय 8
वचन

Tips 1. वचन—हिन्दी व्याकरण में 'वचन' का अर्थ है 'संख्या'। 'लड़का आता है' और 'लड़के आते हैं' इन दोनों वाक्यों में पहली बार 'लड़का' शब्द का एकवचन में प्रयोग हुआ है और दूसरी बार 'लड़के' का बहुवचन में। पहले वाक्य में 'लड़का' शब्द से ज्ञात होता है कि कोई एक ही लड़का है, परन्तु दूसरे वाक्य में 'लड़के' से ज्ञात होता है कि आने वाले लड़के कई हैं।

Tips 2. वचन के भेद—हिन्दी में वचन दो हैं—
1. एकवचन (Singular) और 2. बहुवचन (Plural)।

1. **एकवचन**—जो एक संख्या का ज्ञान कराता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—लड़का, गाय, बैल, घोड़ा, कुत्ता, नदी, पर्वत आदि।
2. **बहुवचन**—जो एक से अधिक संख्या का ज्ञान कराता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—लड़के, गाये, बैलें, घोड़े, कुत्ते, नदियाँ, पर्वतें आदि।

Tips 3. बहुवचन के नियम—वाक्य में कभी-कभी संज्ञाओं के बाद विभक्ति-चिह्नों का प्रयोग नहीं किया जाता है। कर्ता और कर्म कारक में यह बात विशेष रूप से देखी जाती है। जैसे—बालक खेलते हैं; दस आम लाओ। इन दोनों वाक्यों में बालक के साथ कर्ता के 'ने' चिह्न तथा 'आम' के साथ कर्म के 'को' चिह्न का प्रयोग नहीं हुआ है। इसी तरह 'वे दिल्ली रहते हैं' में दिल्ली के बाद 'में' चिह्न का अभाव है।

I. विभक्ति-चिह्न रहित संज्ञाएँ—संज्ञा के साथ जब विभक्ति-चिह्नों का प्रयोग नहीं होता है, तब उसे 'विभक्ति-चिह्न रहित संज्ञाएँ' कहते हैं। इस तरह की संज्ञाओं से बहुवचन बनाने के कुछ प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं—

1. विभक्ति-चिह्न-रहित रहने पर निम्नलिखित पुंलिंग शब्दों का एकवचन और बहुवचन समान होता है—
   अकारांत—बालक, घर, नर आदि।
   इकारांत—ऋषि, कवि, मुनि आदि।
   ईकारांत—भाई, स्वामी, सिपाही आदि।
   उकारांत—गुरु, साधु, कृपालु आदि।
   ऊकारांत—डाकू, भालू, उल्लू आदि।
   एकारांत—दूबे, चौबे आदि।
   ओकारांत—कोदो, रासो आदि।
   औकारांत—जौ आदि।
2. विभक्ति-चिह्न-रहित आकारांत संस्कृत पुंलिंग शब्द एकवचन और बहुवचन में समान रहते हैं। जैसे—कर्ता, दाता, राजा आदि।
3. विभक्ति-चिह्न-रहित संबंधवाचक, उपनामवाचक और प्रतिष्ठावाचक आकारांत पुंलिंग शब्दों के रूप भी दोनों वचनों में समान होते हैं। जैसे—मामा, काका, भैया, पंडा, राजा आदि।
4. विभक्ति-चिह्न-रहित अन्य आकारांत पुंलिंग शब्दों के आकार के स्थान पर एकार रखकर बहुवचन बनाते हैं। जैसे—दिया-दिये, पैसा-पैसे, सोंटा-सोंटे आदि।
5. विभक्ति-चिह्न-रहित अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों से बहुवचन बनाने के लिए अकार के स्थान पर 'एँ' का प्रयोग करते हैं। जैसे—बात-बातें, रात-रातें, गाय-गायें, किताब-किताबें आदि।
6. बहुवचन बनाने के लिए इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़ते हैं। जैसे—विधि-विधियाँ, सिद्धि-सिद्धियाँ, तिथि-तिथियाँ, देवी-देवियाँ आदि।
7. निर्विभक्तिक ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द में 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' रखकर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे—नदी-नदियाँ, छुरी-छुरियाँ, परी-परियाँ, गाली-गालियाँ आदि।
8. 'इया' अंतवाले निर्विभक्तिक स्त्रीलिंग शब्द से बहुवचन बनाने के लिए 'या' पर चन्द्रबिन्दु का प्रयोग करते हैं। जैसे—चिड़िया-चिड़ियाँ, डिबिया-डिबियाँ आदि।
9. निर्विभक्तिक अकारांत, आकारांत, उकारांत, ऊकारांत आदि स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए अंत में 'एँ' जोड़ते हैं। जैसे—लता-लताएँ, ऋतु-ऋतुएँ आदि।

II. विभक्ति-चिह्न सहित संज्ञाएँ—जिन संज्ञाओं के साथ ने, को, से आदि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विभक्ति-चिह्न सहित संज्ञाएँ' कहते हैं। इस तरह की संज्ञाओं से बहुवचन बनाने के कुछ नियम निम्नलिखित हैं—

1. आकारांत एवं उकारांत संस्कृत शब्दों तथा ऊकारांत और औकारांत शब्दों के अंत में 'ओं' जोड़कर बहुवचन बनते हैं। जैसे—माता-माताओं ने, लता-लताओं को, गुरु-गुरुओं से, वधू-वधुओं के लिए, बिच्छू-बिच्छुओं का, गौ-गौओं के आदि।
2. तत्सम (संस्कृत)-भिन्न आकारांत शब्दों एवं अकारांत तथा एकारांत शब्दों के अंतिम आ, अ या ए के स्थान पर 'ओं' रखकर बहुवचन

CLICK HERE TO BUY BOOK

बनाया जाता है। जैसे—दादा-दादों को, छाता-छातों पर, बालक-बालकों से, बात-बातों में, दूबे-दूबों को आदि।

3. इकारांत तथा ईकारांत शब्दों के अंत में 'यों' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे—निधि-निधियों को, गाली-गालियों से, धनी-धनियों के लिए आदि।
4. शब्द के साथ गण, जन, वृन्द और लोग शब्दों का भी प्रयोग बहुवचन बनाने के लिए किया जाता है। विभक्ति आदि रहने पर गण आदि शब्दों के अंतिम 'अ' के स्थान पर 'ओं' हो जाता है। जैसे—छात्र-छात्रगणों से, वृद्ध-वृद्धजनों को, शिक्षक-शिक्षकवृन्दों पर आदि।

***नोट**—प्राण, लोग, भाग्य, दर्शन, ओठ, अक्षत, हस्ताक्षर, आँसू आदि बहुत-से शब्द हैं, जो बहुवचन हैं। द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग सदा एकवचन में होता है। जैसे—डुमराव महाराज के पास बहुत सोना है। पर, यदि द्रव्य के भिन्न-भिन्न प्रकारों का बोध हो, तो द्रव्यवाचक संज्ञा बहुवचन में प्रयुक्त होती है। जैसे—जमशेदपुर में बहुत तरह के लोहे मिलते हैं।*

अध्याय 9

कारक

Tips 1. कारक—संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप, जो वाक्य के अन्य शब्दों, विशेषत: क्रिया से अपना संबंध प्रकट करता है, 'कारक' कहा जाता है।

प्रत्येक पूर्ण वाक्य में संज्ञाओं तथा सर्वनामों का मुख्य रूप से क्रियाओं के साथ और गौण रूप से आपस में भी संबंध रहता है। जैसे—'राम ने रावण को मारा।' वाक्य में 'मारा' क्रिया का संबंध 'राम' और 'रावण' दोनों से है। किसने मारा? राम ने। किसको मारा? रावण को। राम और रावण का क्रिया के साथ तो संबंध है ही, साथ ही इन दोनों में भी एक संबंध है। वाक्य में पाये जाने वाले संज्ञा और सर्वनाम शब्द परस्पर संबद्ध होते हैं। इस संबंध को बतलाना कारकों का काम है।

Tips 2. कारक के भेद—हिन्दी में आठ कारक हैं। इन कारकों के साथ क्रमश: गणना के रूप में आनेवाले प्रथमा, द्वितीया आदि शब्द 'विभक्ति' कहे जाते हैं।

कारक-चिह्नों को 'प्रत्यय' तथा 'परसर्ग' भी कहते हैं। कारक के निम्नलिखित आठ भेद हैं—

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता	०, ने
द्वितीया	कर्म	०, को
तृतीया	करण	से, के द्वारा, के जरिए, के कारण
चतुर्थी	संप्रदान	को, के लिए, के निमित्त
पंचमी	अपादान	से
षष्ठी	संबंध	का, के, की
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
अष्टमी	संबोधन	ओ, अरे, हे, अजी, ०

Tips 3. कर्ता कारक—'कर्ता' का अर्थ है, करने वाला। जो कोई क्रिया करता है, उसे क्रिया का कर्ता कहते हैं। जैसे—राम पढ़ता है, श्याम हँसता है। यहाँ पढ़ने वाला 'राम' है, अत: वह 'पढ़ना' क्रिया का कर्ता है। इसी तरह 'हँसना' क्रिया का कर्ता 'श्याम' है। कर्ता का चिह्न 'ने' है, परन्तु उसका सर्वत्र प्रयोग नहीं होता है। वर्तमान और भविष्यत् काल में 'ने' का प्रयोग बिलकुल ही नहीं होता है। भूतकाल के कुछ भेदों में कुछ विशिष्ट क्रियाओं के साथ उसका प्रयोग होता है। अपूर्ण तथा हेतुहेतुमद् भूत में 'ने' का प्रयोग नहीं होता है। जैसे—वह खा रहा था (अपूर्ण भूत), वह पढ़ता तो विद्वान् होता (हेतुहेतुमद् भूत) आदि।

'ने' चिह्न का प्रयोग—कर्ता के 'ने' चिह्न का प्रयोग साधारणतया निम्नलिखित अवस्थाओं में होता है—

(1) कर्तृवाच्य में बोलना, भूलना, बकना, लाना आदि कुछ सकर्मक क्रियाओं को छोड़कर अन्य सकर्मक क्रियाओं के सामान्य, आसन्न, पूर्ण तथा संदिग्ध भूत में कर्ता के साथ 'ने' चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

मैंने पुस्तक पढ़ी।	(सामान्य भूत)
मैंने पुस्तक पढ़ी है।	(आसन्न भूत)
मैंने पुस्तक पढ़ी थी।	(पूर्ण भूत)
मैंने पुस्तक पढ़ी होगी।	(संदिग्ध भूत)

'बोलना' क्रिया के साथ यदि 'बोली' कर्म के रूप में आये, तो 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे—उसने बोलियाँ बोलीं।

अन्यत्र 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे—वे बोले; मैं बोला हूँ आदि। इसी तरह मैं भूला हूँ; तुम बहुत बके।

(2) जानना, लाना, पुकारना, सोचना, समझना के साथ 'ने' चिह्न का प्रयोग कभी होता है, कभी नहीं। जैसे—*मैंने* जाना—मैं जाना, *मैंने* पुकारा—मैं पुकारा।

(3) नहाना, छींकना, थूकना, खाँसना—इन अकर्मक क्रियाओं के साथ भी 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे—*उसने* नहाया, *तुमने* छींका, *किसने* थूका, *किसने* खाँसा।

(4) अकर्मक क्रियाएँ जब सकर्मक हो जाती हैं, तब 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे—*उसने* टेढ़ी चाल चली। *उसने* लड़ाई लड़ी।

(5) जब संयुक्त क्रिया के दोनों खंड सकर्मक हों, तब 'ने' चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—*उसने* उत्तर दे दिया। *उसने* खाना खा लिया।

(6) संयुक्त क्रिया का यदि अंतिम खंड अकर्मक हो, तो 'ने' का प्रयोग नहीं होता है। जैसे—मैं खा चुका।

(7) संयुक्त क्रिया का अंतिम खंड यदि सकर्मक हो, तो 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे—*उसने* रो दिया।

Tips 4. कर्म कारक—जिस पदार्थ पर कर्ता की क्रिया का फल पड़े, उसे 'कर्म कारक' कहते हैं। 'राम ने श्याम को पीटा'—इस वाक्य में कर्ता 'राम' की क्रिया 'पीटना' का फल 'श्याम' पर पड़ता है, अर्थात् यहाँ श्याम पीटा जाता है, अत: उसे कर्म कहेंगे। कर्म कारक का चिह्न 'को' है। इसका प्रयोग कभी होता है, कभी यह लुप्त रहता है। जैसे—'उसने सीता को देखा'—यहाँ 'को' चिह्न प्रकट है। प्राय: अचेतन पदार्थों के साथ और कभी-कभी चेतन पदार्थों के साथ भी 'को' चिह्न लुप्त रहता है। जैसे—मैंने आम खाया, मैंने एक आदमी देखा। 'को' के साथ कर्म रहने पर क्रिया सदा पुंलिंग एकवचन रहती है और 'को' के बिना कर्म रहने पर कर्म के अनुसार। जैसे—राम ने चींटी को मारा; राम ने चींटी मारी।

'को' चिह्न का प्रयोग—कर्म के 'को' चिह्न का प्रयोग निम्नांकित अवस्थाओं में होता है—

(1) सकर्मक क्रिया का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म है और उसके बाद 'को' चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—राम ने *श्याम को* पीटा, माता *बच्चे को* पढ़ाती है।

CLICK HERE TO BUY BOOK

अपादान	तुझसे	तुमसे
संबंध	तेरे, तेरा, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझमें, तुझपर	तुममें, तुमपर

अन्य पुरुष 'वह'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने, उनने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा
संप्रदान	उसको, उसे, उसके लिए	उनको, उन्हें, उनके लिए
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका, उसके, उसकी	उनका, उनके, उनकी
अधिकरण	उसमें, उसपर	उनमें, उनपर

आदरसूचक पुरुषवाचक 'आप'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आप, आपने	आपलोग, आपलोगों ने
कर्म	आपको	आपलोगों को
करण	आपसे, के द्वारा	आपलोगों से, के द्वारा
संप्रदान	आपको, के लिए	आपलोगों को, के लिए
अपादान	आपसे	आपलोगों से
संबंध	आपका, के, की	आपलोगों का, के, की
अधिकरण	आपमें, पर	आपलोगों में, पर

निश्चयवाचक 'यह'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने, इनने
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
संप्रदान	इसे, इसको, इसके लिए	इन्हें, इनको, इनके लिए
अपादान	इससे	इनसे
संबंध	इसका, इसके, इसकी	इनका, इनके, इनकी
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

***नोट**–'वह' शब्द का रूप भी 'यह' की तरह होता है। 'यह' में 'य' का 'इ' होता है और 'वह' में 'व' का 'उ'। अत: 'वह' के स्थान पर 'उस' हो जाता है।*

अनिश्चयवाचक 'कोई'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई, किसी ने	–
कर्म	किसी को	–
करण	किसी से, किसी के द्वारा	–
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	–
अपादान	किसी से	–
संबंध	किसी का, किसी के, किसी की	–
अधिकरण	किसी में, किसी पर	–

***नोट**–बहुवचन में इसका रूप नहीं पाया जाता है।*

संबंधवाचक 'जो'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने, जिनने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे, जिसके द्वारा	जिनसे, जिनके द्वारा
संप्रदान	जिसको, जिसे, जिसके लिए	जिनको, जिन्हें, जिनके लिए
अपादान	जिससे	जिनसे
संबंध	जिसका, जिसके, जिसकी	जिनका, जिनके, जिनकी
अधिकरण	जिसमें, जिसपर	जिनमें, जिनपर

प्रश्नवाचक 'कौन'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको
करण	किससे, किसके द्वारा	किनसे, किनके द्वारा
संप्रदान	किसको, किसे, किसके लिए	किनको, किन्हें, किनके लिए
अपादान	किससे	किनसे
संबंध	किसका, के, की	किनका, के, की
अधिकरण	किसमें, किसपर	किनमें, किनपर

अध्याय 11
विशेषण

Tips 1. विशेषण—जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषताएँ बताए, उसे 'विशेषण' कहते हैं। 'अच्छा लड़का पिता की आज्ञा का पालन करता है'—इस वाक्य में 'अच्छा' शब्द 'लड़का' संज्ञा शब्द की विशेषता बताता है।

विशेषण की परिभाषा दूसरे प्रकार से भी दी जाती है, जो इस प्रकार हैं—जो शब्द संज्ञा के अर्थ की सीमा को निर्धारित करे, उसे विशेषण कहते हैं। उदाहरण के लिए, 'काली गाय' कहने से पूरी गाय जाति में केवल 'काली गाय' अर्थात् सीमित अर्थ का बोध होता है।

विशेषण से जिस शब्द की विशेषता प्रकट की जाती है, उसे 'विशेष्य' कहते हैं। 'अच्छा विद्यार्थी पिता की आज्ञा का पालन करता है' में 'विद्यार्थी' विशेष्य है, क्योंकि 'अच्छा' विशेषण इसी की विशेषता बताता है।

Tips 2. विशेषण के कार्य—विशेषण के निम्नलिखित प्रमुख कार्य हैं—

1. **विशेषता बताना**—विशेषण के द्वारा किसी व्यक्ति या वस्तु की विशेषता बताई जाती है। जैसे—मोहन *सुन्दर* है। यहाँ 'सुन्दर' मोहन की विशेषता बताता है।
2. **हीनता बताना**—विशेषण किसी की हीनता बताता है। जैसे—वह लड़का *शैतान* है। यहाँ 'शैतान' लड़के की हीनता बताता है।
3. **अर्थ सीमित करना**—विशेषण द्वारा अर्थ को सीमित किया जाता है। जैसे—*काली* गाय मैदान में घास चर रही है। यहाँ 'काली' शब्द गाय के एक विशेष प्रकार का अर्थबोध कराता है।
4. **संख्या निर्धारित करना**—विशेषण संख्या निर्धारित करने का काम करता है। जैसे—*एक* आम दो। यहाँ 'एक' शब्द से आम की संख्या निर्धारित होती है।
5. **परिमाण या मात्रा बताना**—विशेषण के द्वारा मात्रा बताने का काम किया जाता है। जैसे—पाँच किलो दूध दो। यहाँ 'पाँच किलो' से दूध की निश्चित मात्रा का अर्थबोध होता है।

Tips 3. विशेषण के भेद—अर्थ की दृष्टि से विशेषण के मुख्यत: निम्न छ: भेद हैं—

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण
5. तुलनाबोधक विशेषण
6. संबंधवाचक विशेषण

CLICK HERE TO BUY BOOK

भूतकाल के भेद—भूतकाल के निम्न छ: भेद होते हैं—(i) सामान्य भूतकाल, (ii) आसन्न भूतकाल, (iii) पूर्ण भूतकाल, (iv) अपूर्ण भूतकाल, (v) संदिग्ध भूतकाल और (vi) हेतुहेतुमद्भूतकाल।

(i) सामान्य भूतकाल—'सामान्य भूत' क्रिया के उस रूप को कहते हैं, जिससे भूतकाल में क्रिया के किसी निश्चित या विशेष काल में होने की जानकारी नहीं मिले। इस क्रिया-रूप से भूतकाल की सामान्य अवस्था का ज्ञान होता है। जैसे—'राम ने आम *खाया*', 'वह *चला गया*'। इन वाक्यों में आये 'खाया' तथा 'चला गया' क्रिया-रूपों से भूतकाल की सामान्य अवस्था का ज्ञान होता है, क्रिया की पूर्णता-अपूर्णता की कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है।

(ii) आसन्न भूतकाल—जिस काल से यह ज्ञात होता है कि क्रिया कुछ ही देर पहले समाप्त हुई है, उसे 'आसन्न भूत' कहते हैं। जैसे—उसने *खाया* है, मैंने *देखा* है। इन वाक्यों में 'खाया है' और 'देखा है' से ज्ञात होता है कि क्रिया कुछ ही देर पहले समाप्त हुई है। इसी से इसे 'पूर्ण वर्तमान' भी कहते हैं।

(iii) पूर्ण भूतकाल—जिस काल से यह ज्ञात हो कि क्रिया बहुत पहले समाप्त हो गयी उसे 'पूर्ण भूत' कहते हैं। जैसे—श्याम गया था, उसने खाया था। इन वाक्यों से मालूम पड़ता है कि 'जाने' और 'खाने' की क्रिया बहुत पहले समाप्त हो चुकी है। अत: 'गया था' और 'खाया था' पूर्ण भूत के क्रिया-रूप हैं।

(iv) अपूर्ण भूतकाल—जिस काल से यह ज्ञात हो कि क्रिया भूतकाल में प्रारंभ हुई, परंतु उसकी पूर्णता की जानकारी नहीं मिले उसे 'अपूर्ण भूत' कहते हैं। जैसे—राम जाता था, वह खा रहा था। इन दोनों वाक्यों में 'जाता था' और 'खा रहा था' से यह ज्ञात होता है कि क्रिया का संबंध भूतकाल से है, परन्तु उसकी पूर्णता की जानकारी नहीं मिलती है। अत: यहाँ अपूर्ण भूत है।

(v) संदिग्ध भूतकाल—जिस काल से भूतकाल में क्रिया के होने में संदेह मालूम पड़े उसे 'संदिग्ध्य भूत' कहते हैं। जैसे—राम ने खाया होगा। इस वाक्य में 'खाया होगा' से 'खाना' क्रिया के भूतकाल में होने में सन्देह मालूम पड़ता है, अत: यहाँ सन्दिग्ध भूत है।

(vi) हेतुहेतुमद्भतकाल—जिस काल से यह ज्ञात हो कि कोई हेतु या कारण रहा होता तो (उसके फलस्वरूप) क्रिया भूतकाल में हुई होती उसे 'हेतुहेतुमद्भूत' कहते हैं। जैसे—श्याम आता तो मैं जाता, यदि राम पढ़ता तो अवश्य विद्वान् होता। यहाँ 'जाना' और 'होना' क्रिया के भूतकाल में न हो पाने की 'सूचना' मिलती है, क्योंकि उनके कारण—क्रमश: 'आना' और 'पढ़ना'—उपस्थित नहीं हो सके।

2. भविष्यत् काल—जिस काल से आनेवाले समय में होनेवाली क्रिया की जानकारी मिले, उसे 'भविष्यत् काल' कहते हैं। जैसे—वह खाएगा। इस वाक्य में 'खाएगा' से ज्ञात होता है कि खाने की क्रिया आनेवाले समय में होगी, अत: इसे भविष्यत् काल का रूप मानेंगे।

भविष्यत् काल के भेद—भविष्यत् काल के निम्न तीन भेद हैं—(i) सामान्य भविष्यत् काल, (ii) सम्भाव्य भविष्यत् काल और (iii) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल।

(i) सामान्य भविष्यत् काल—जिस काल से भविष्य में होनेवाली क्रिया की काल-संबंधी सामान्य अवस्था का ज्ञान हो, उसे 'सामान्य भविष्यत्' कहते हैं। जैसे—तुम खाओगे, मैं जाऊँगा। इन वाक्यों में 'खाओगे' और 'जाऊँगा' से भविष्यत् काल के सामान्य रूप का ज्ञान होता है। इनमें किसी तरह की संभावना या शर्त का संकेत नहीं मिलता है।

(ii) सम्भाव्य भविष्यत् काल—जिससे किसी क्रिया के भविष्य में होने की संभावना प्रकट हो, उसे 'संभाव्य भविष्यत्' कहते हैं। जैसे—संभव है, वह कल घर आए। हो सकता है, वह परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाए।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल—भविष्यत् काल का वह रूप, जिसमें किसी क्रिया का होना किसी कारण की उपस्थिति पर निर्भर करता है। 'हेतुहेतुमद् भविष्यत्' कहलाता है। जैसे—श्याम पढ़े, तो विद्वान् हो। यहाँ श्याम का विद्वान् होना उसके 'पढ़ने' पर निर्भर करता है।

3. वर्तमान काल—वर्तमान काल क्रिया का वह रूप है, जिससे बीत रहे (वर्तमान) समय में किसी क्रिया के होने का ज्ञान हो। जैसे—राम खाता है। तुम जा रहे हो।

वर्तमान काल के भेद—अवस्था की दृष्टि से वर्तमान काल के तीन भेद हैं—(i) सामान्य वर्तमान, (ii) तात्कालिक वर्तमान और (iii) संदिग्ध वर्तमान।

(i) सामान्य वर्तमान काल—यह वर्तमान काल का वह रूप है, जिससे किसी क्रिया के वर्तमान काल में होने की सामान्य अवस्था का ज्ञान होता है। जैसे—राम पढ़ता है। मैं खाता हूँ। इन वाक्यों में आये 'पढ़ता है' और 'खाता हूँ' से पढ़ने और खाने की क्रिया के वर्तमान काल में होने की जानकारी अवश्य मिलती है, परंतु वर्तमान की किसी विशेष अवस्था का ज्ञान नहीं होता है।

(ii) तात्कालिक वर्तमान काल—वर्तमान काल के जिस रूप से यह ज्ञान हो कि क्रिया चल रही है, उसे 'तात्कालिक वर्तमान' कहते हैं। जैसे—तुम कहाँ जा रहे हो? यहाँ 'जा रहे हो' से ज्ञात होता है कि जिस व्यक्ति से प्रश्न किया जा रहा है, उसके जाने की क्रिया चल रही है।

(iii) संदिग्ध वर्तमान काल—जिस काल से क्रिया के वर्तमान काल में होने में संदेह मालूम पड़ता हो, अर्थात् क्रिया हो रही है या नहीं, यह सन्देह बना रहे, उसे 'संदिग्ध वर्तमान' कहते हैं। जैसे—वह खा रहा होगा। श्याम आता होगा। यहाँ 'खाना' और 'आना' क्रिया (की सिद्धि) में संदेह मालूम पड़ता है।

अध्याय 14
वाच्य

Tips 1. वाच्य—प्रत्येक संज्ञा या सर्वनाम का अपना लिंग, वचन तथा पुरुष होता है। अपने शुद्ध रूप में स्थित क्रिया का न तो अपना कोई लिंग होता है और न वचन अथवा पुरुष ही। क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष वाक्य में प्रयुक्त होनेवाले उस संज्ञा या सर्वनाम के अनुसार ही होता है, जो कर्ता या कर्म के रूप में क्रिया को प्रभावित करते हैं। भाव में प्रत्यय होने पर क्रिया स्वभावत: एकवचन, पुंलिंग, अन्यपुरुष में रहती है। कर्ता, कर्म अथवा भाव के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का होना ही 'वाच्य' कहलाता है।

Tips 2. वाच्य के भेद—वाच्य के निम्न तीन भेद हैं—
1. कर्तृवाच्य , 2. कर्मवाच्य और 3. भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य—जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो, अर्थात् 'जिसमें कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन एवं पुरुष हो, उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं। जैसे—राम आम खाता है। शीला घर जाएगी। इन दोनों वाक्यों में क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरुष के ही अनुसार है। राम आम खाता है—इस वाक्य में 'राम' और 'खाता है' दोनों पुंलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष हैं। इसी तरह 'शीला घर जाएगी' में भी कर्ता और क्रिया दोनों ही अन्यपुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग हैं।

CLICK HERE TO BUY BOOK

2. **कर्मवाच्य**—जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता हो, अर्थात् उसमें आनेवाली क्रिया के लिंग, पुरुष तथा वचन कर्म के लिंग, पुरुष एवं वचन के अनुसार हों, कर्ता के अनुसार नहीं, उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं। यह वाच्य सकर्मक क्रियाओं से ही बनता है, क्योंकि कर्म न होगा तो 'कर्मवाच्य' कैसे बनेगा। जैसे—राम द्वारा आम खाया जाता है। उसके द्वारा सोहन देखा जाएगा। मोहन अपने गुरुओं द्वारा प्रशंसित हुआ है।
3. **भाववाच्य**—भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है और क्रिया के लिंग, पुरुष एवं वचन कर्ता या कर्म के अनुसार नहीं होते अपितु क्रिया सर्वदा अन्यपुरुष, एकवचन, पुंलिंग रहती है। भाववाच्य अकर्मक धातुओं से ही होता है, इसमें कर्म नहीं रहता। जैसे—उसके द्वारा हँसा जाता है। तुम्हारे द्वारा रोया जा रहा था। राम द्वारा उठा गया।

क्रिया के जो विभिन्न रूप बनते हैं, उनमें काल, वचन, लिंग, पुरुष, वाच्य, प्रकार आदि का पूरा योग रहता है।

अध्याय 15
अव्यय या अविकारी शब्द

Tips 1. अव्यय या अविकारी शब्द—'अव्यय' ऐसे शब्द को कहते हैं, जिसके रूप में लिंग, वचन तथा कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे—जब, तब, यहाँ, किधर, कब आदि।

Tips 2. अव्यय के भेद—अव्यय के निम्न चार भेद हैं—1. क्रियाविशेषण, 2. संबंधबोधक, 3. समुच्चयबोधक और 4. विस्मयादिबोधक।

Tips 3. क्रियाविशेषण—जिस अव्यय से क्रिया की कोई विशेषता जानी जाती है, उसे 'क्रियाविशेषण' कहते हैं। क्रिया की यह विशेषता चार प्रकार की हो सकती है—(a) स्थान संबंधी, (b) काल संबंधी, (c) रीति संबंधी और (d) परिणाम संबंधी।

यहाँ, वहाँ, धीरे, जल्दी, अभी, बहुत आदि शब्द क्रियाविशेषण हैं। जैसे—राम वहाँ जा रहा है—इस वाक्य में 'वहाँ' शब्द क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह 'जाना' क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता है। 'वह आज पढ़ने गया' तथा 'उससे बाजार में अचानक भेंट हो गई'—इन वाक्यों में आये 'आज' तथा 'अचानक' शब्द क्रमश: क्रिया की काल तथा रीति से संबद्ध विशेषता बताते हैं। 'वह बहुत खाता है' में 'बहुत' शब्द 'खाना' क्रिया की परिमाण (मात्रा) संबंधी विशेषता बताता है।

Tips 4. क्रियाविशेषण के कार्य—क्रियाविशेषण के निम्नलिखित कार्य हैं—

1. क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताता है। जैसे—वह *तेजी-से* पढ़ता है। वह *जोर-से* बोलता है। यहाँ 'तेजी-से' और 'जोर-से' क्रमश: 'पढ़ना' तथा 'बोलना' क्रियाओं की विशेषता बताते हैं।
2. क्रियाविशेषण क्रिया के संपादित होने का ढंग बताता है। जैसे—पुस्तकें *धड़ाधड़* बिक रही हैं। यहाँ 'धड़ाधड़' शब्द 'बिकना' क्रिया का ढंग बताता है।
3. यह क्रिया के होने की निश्चयता तथा अनिश्चयता का बोध कराता है। जैसे—वह *अवश्य* आएगा। वह *शायद* खाएगा। यहाँ 'अवश्य' और 'शायद' अपनी-अपनी क्रिया की निश्चयता तथा अनिश्चयता का बोध कराते हैं।
4. यह क्रिया के होने में निषेध और स्वीकृति का बोध कराता है। जैसे—*मत* पढ़ो। *हाँ,* जाओ।
5. यह क्रिया के घटित होने की स्थिति, दिशा, विस्तार और परिमाण का बोध कराता है। जैसे—वह *ऊपर* सोता है। *भीतर* बैठो। यहाँ 'ऊपर' और 'भीतर', क्रमश: 'सोना' और 'बैठना' क्रिया की स्थिति का बोध कराते हैं।

सड़क के *दाएँ* चलो। *उधर* खेलो। यहाँ 'दाएँ' और 'उधर' क्रमश: 'चलना' और 'खेलना' क्रिया की दिशा का बोध कराते हैं।

Tips 5. क्रियाविशेषण के स्रोत—हिन्दी में क्रियाविशेषण निम्न स्रोतों से आये हैं—

1. **संस्कृत से**—बहुधा, अकस्मात्, साक्षात्, अन्तत:, कदाचित्, फलत:, अत:, पुन:, प्राय:, अतएव, सर्वदा, सर्वथा, सहसा, संप्रति, येनकेनप्रकारेण, मुख्यतया आदि।
2. **तद्भव रूपों से**—ठीक-ठीक, यहाँ, वहाँ, सबेरे, घर, बाहर, धुआँधार, नया-नया, धीरे-धीरे, पास-पास, कहीं-न-कहीं, थोड़ा, तड़के, सटासट, ताबड़तोड़, खटाखट आदि।
3. **फारसी से**—हमेशा, आखिर, अक्सर, फौरन, जल्दी, रोजाना, सालाना, बिलकुल, करीब-करीब, खूब, निहायत, तकरीबन, बराबर, जरूर, कतई, सरासर, शायद, तरह, मसलन, वगैरह, कुल आदि।
4. **अँगरेजी से**—मंथली, वीकली, क्वाटरली, डेली आदि।

Tips 6. क्रियाविशेषण के भेद—क्रियाविशेषणों का तीन आधारों पर वर्गीकरण किया जा सकता है—(1) प्रयोग के आधार पर, (2) अर्थ के आधार पर और (3) रूप के आधार पर।

(1) प्रयोग के आधार पर—प्रयोग के आधार पर क्रियाविशेषण के निम्न तीन भेद किये जा सकते हैं—(i) साधारण, (ii) संयोजक और (iii) अनुबद्ध क्रियाविशेषण।

(i) साधारण क्रियाविशेषण उन क्रियाविशेषणों को कहते हैं, जिनका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है। जैसे—अब, जल्दी, कहाँ आदि।

(ii) संयोजक क्रियाविशेषण उन क्रियाविशेषणों को कहते हैं, जिनका संबंध उपवाक्य से रहता है। ये क्रियाविशेषण संबंधवाचक सर्वनामों से बनते हैं। जैसे—जब आप आएँगे, तब मैं घर जाऊँगा। जहाँ आप जाएँगे, वहाँ मैं भी जाऊँगा। यहाँ 'जब-तब', 'जहाँ-वहाँ' संयोजक क्रियाविशेषण हैं।

(iii) अनुबद्ध क्रियाविशेषण उन क्रियाविशेषणों को कहते हैं, जिनका प्रयोग किसी शब्द के साथ अवधारण के लिए होता है। जैसे—तो, तक, भर, भी आदि।

(2) अर्थ के आधार पर—अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के निम्न चार भेद किये जा सकते हैं—(i) स्थानवाचक, (ii) कालवाचक, (iii) परिमाणवाचक और (iv) रीतिवाचक।

(i) स्थानवाचक क्रियाविशेषण—यह दो प्रकार का होता है—
  (a) स्थितिवाचक—यहाँ, वहाँ, साथ, बाहर, भीतर आदि।
  (b) दिशावाचक—इधर, उधर, किधर, दाहिने, बाँये आदि।

(ii) कालवाचक क्रियाविशेषण—यह तीन प्रकार का होता है—
  (a) समयवाचक—आज, कल, जब, पहले, तुरन्त, अभी आदि।
  (b) अवधिवाचक—आजकल, नित्य, सदा, लगातार, दिनभर आदि।
  (c) पौन: पुण्य (बार-बार) वाचक—बहुधा, प्रतिदिन, कई बार, हर बार आदि।

(iii) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—यह मुख्यत: पाँच प्रकार का होता है—
  (a) अधिकताबोधक—बहुत, बड़ा, भारी, अत्यन्त आदि।
  (b) न्यूनताबोधक—कुछ, लगभग, थोड़ा, प्राय: आदि।

CLICK HERE TO BUY BOOK

बाएँ हाथ से तीर चलाने वाला, गांडीव नामक धनुष को धारण करनेवाला, पांडु का पुत्र अर्जुन कुरुक्षेत्र के मैदान में अपने भाइयों, भतीजों, सालों आदि को देखकर विचलित हो गया।

—प्रसरित वाक्य

सव्यसाची, गांडीवधारी पांडव अर्जुन कुरुक्षेत्र के मैदान में अपने संबंधियों को देखकर विचलित हो गया। —संकुचित वाक्य

Tips 5. वाक्य-संयोजन—वाक्य-संयोजन में अनेक वाक्यों का एक वाक्य बनाया जाता है। जैसे—

1. राम विद्यालय जाता है।
2. मोहन विद्यालय जाता है।
3. सोहन विद्यालय जाता है।

इन तीनों वाक्यों का संयोजन कर 'राम, मोहन और सोहन विद्यालय जाते हैं' वाक्य बना।

अध्याय 21
वाक्य-विग्रह

Tips 1. वाक्य-विग्रह—किसी वाक्य के विभिन्न अंगों को अलग-अलग कर उसके पारस्परिक संबंध दिखाने की रीति को 'वाक्य-विग्रह' कहते हैं। इसे ही वाक्य-विभाजन या वाक्य-विश्लेषण भी कहते हैं।

रचना की दृष्टि से वाक्य निम्न तीन प्रकार के होते हैं—

1. सरल वाक्य, 2. मिश्र वाक्य तथा 3. संयुक्त वाक्य।

1. सरल वाक्य का विग्रह—सरल वाक्य के विग्रह में उद्देश्य और उद्देश्य का विस्तार, विधेय और विधेय का विस्तार बताये जाते हैं—

उद्देश्य और विधेय—जिस साधारण वाक्य में एक ही समापिका क्रिया हो, उसके दो भाग किये जा सकते हैं—(a) उद्देश्य और (b) विधेय।

(a) *उद्देश्य*—वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं। किसी वाक्य में समापिका क्रिया का कर्ता ही उद्देश्य हुआ करता है। जैसे—*राम* जाता है, *सीता* सो गयी, *तुम* कहाँ गये थे? इन वाक्यों में 'राम', 'सीता' तथा 'तुम' उद्देश्य हैं; क्योंकि पहले वाक्य में 'राम' के विषय में, दूसरे वाक्य में 'सीता' के विषय में और तीसरे वाक्य में 'तुम' के विषय में कहा गया है।

(i) *उद्देश्य के विभिन्न रूप*—उद्देश्य के निम्न रूप हो सकते हैं—
संज्ञा—*राम* जाता है।
सर्वनाम—*मैं* जाता हूँ।
विशेषण—*चरित्रहीन* अपमानित होता है।
क्रियार्थक संज्ञा—*टहलना* लाभप्रद है।
वाक्यांश—*भाग्य के भरोसे बैठना* कायरों का काम है।
वाक्य—*राष्ट्रकवि दीर्घायु हों,* ऐसी हमारी शुभकामना है।

(ii) *उद्देश्य का विस्तार*—जो शब्द उद्देश्य की विशेषता बताते हैं, उन्हें 'उद्देश्य का विस्तार' कहते हैं। जैसे—चंचल बालक दौड़ता है, वह आदमी आ रहा है। इन वाक्यों मे 'चंचल' बालक की विशेषता बताता है और 'वह' आदमी की, अत: ये दोनों क्रमश: 'बालक' और 'आदमी' के विस्तार कहे जायेंगे। इन वाक्यों में 'बालक' और 'आदमी' शब्द उद्देश्य के रूप में आये हैं। कभी-कभी यह विस्तार वाक्यांश रूप में भी आ सकता है।

उद्देश्य का विस्तार भी निम्न प्रकार से संभव है—

- विशेषण—*नटखट* लड़का दौड़ता है।
- संबंध कारक—*धनी का* लड़का सुख भोगता है।
- वाक्यांश—*पहाड़ की गोद में मचलती* नदी बड़ी ही लुभावनी मालूम पड़ती है।

(b) *विधेय*—उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे 'विधेय' कहते हैं। जैसे—मोहन खेलता है; राम लिखता है। इन वाक्यों में 'खेलता है' और 'लिखता है' ये दोनों शब्द विधेय हैं, क्योंकि इनसे क्रमश: उद्देश्य 'मोहन' और 'राम' का वर्णन किया जा रहा है।

विधेय का विस्तार—विधेय की विशेषता बतानेवाले को 'विधेय का विस्तार' कहा जाता है। यह निम्न रूपों में पाया जाता है। जैसे—

- क्रियाविशेषण—वह *धीरे-धीरे* आता है।
- कर्मकारक—उसने *राम को* देखा।
- करणकारक—वह *कलम से* लिखता है।
- संप्रदान—उसने *तुम्हारे लिए* सब कुछ किया।
- अपादान—वह *पटना से* आया है।
- अधिकरण—वह *घर में* बैठा है।
- विशेषण का विशेषण—वह *बहुत* धूर्त है।
- पूर्वकालिक कृदंत—वह *कूदकर* भाग गया।
- विशेष्य के बाद आनेवाला विशेषण—यह लड़का *मनहूस* है।

क्रियाद्योतक कृदंत भी विधेय का विस्तार हो जाता है, यदि वह उद्देश्य के विशेषण के रूप में इसके पूर्व नहीं आये। जैसे—वह *हँसते हुए* बोला। आज मैं *लिखते-लिखते* थक गया।

***नोट**—(i) 'रोते हुए लड़के ने कहा' वाक्य में 'रोते हुए' को विधेय का विस्तार नहीं कहेंगे, क्योंकि यह उद्देश्य 'लड़का' का विशेषण बनकर उसके पहले आया है। यहाँ यह उद्देश्य का विस्तार है।*

(ii) संबंध भी विधेय के विस्तार के रूप में आता है, यदि वह उद्देश्य की विशेषता नहीं बताये। जैसे–वह आम के पेड़ से गिर पड़ा।

(iii) उद्देश्य की विशेषता बताने पर संबंधकारक उद्देश्य का विस्तार होता है। जैसे–राम की कलम टूट गयी। 'राम की' यहाँ 'कलम' की विशेषता बताता है।

अत: *सरल वाक्य-विग्रह* में निम्नांकित चार चीजें पायी जाती हैं—
1. उद्देश्य, 2. उद्देश्य का विस्तार, 3. विधेय, 4. विधेय का विस्तार। जैसे—

- वाक्य—राम के भाई ने मेरी सारी किताबें चुरा लीं।
- उद्देश्य—भाई ने
- उद्देश्य का विस्तार—राम के
- विधेय—चुरा लीं
- विधेय का विस्तार—मेरी सारी किताबें

इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है—

उद्धेश्य	उद्देश्य का विस्तार	विधेय	विधेय का विस्तार
भाई ने	राम के	चुरा लीं	मेरी सारी किताबें

2. मिश्र वाक्य का विग्रह—मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और दूसरे आश्रित उपवाक्य होते हैं।

आश्रित उपवाक्य तीन रूपों में आते हैं—

(1) संज्ञा-उपवाक्य (2) विशेषण-उपवाक्य (3) क्रियाविशेषण-उपवाक्य।

(1) संज्ञा-उपवाक्य—यह उपवाक्य व्यवहार में संज्ञा की तरह प्रयुक्त होता है। जैसे—उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा। यहाँ 'मैं घर जाऊँगा' वाक्य संज्ञा की तरह आया है। यह उपवाक्य 'कहा' क्रिया के कर्म या पूरक के रूप में आया है। संज्ञा-उपवाक्य के पहले साधारणतया 'कि' जैसे संयोजक अव्यय का प्रयोग रहता है। कहीं-कहीं 'कि' छिपा रहता है और उसके बदले अल्पविराम (,) का प्रयोग होता है। जैसे—संजय ने कहा, लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में। यहाँ—

CLICK HERE TO BUY BOOK

8. **अन्य अशुद्धियाँ**—उक्त कोटि की अशुद्धियों के अतिरिक्त वाक्यांश में शब्दों के क्रम, विराम चिह्न, वाक्य संयोजन आदि को लेकर भी अनेक अशुद्धियाँ होती हैं। जैसे—
सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए। (अशुद्ध)
प्रमाण सहित (सप्रमाण) उत्तर दीजिए। (शुद्ध)

अध्याय 24
उपसर्ग

Tips 1. उपसर्ग—शब्द-निर्माण के लिए क्रिया या शब्दों के पूर्व जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं; जैसे—प्र, परा, अप, सम आदि। उपसर्गों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता है, वे किसी-न-किसी शब्द के साथ ही आते हैं और उनके अर्थ में प्राय: परिवर्तन भी करते हैं।

उपसर्ग की गतियाँ—उपसर्ग की तीन गतियाँ हैं। उपसर्ग के योग से शब्दार्थ कभी तो अपरिवर्तित रह जाता है, कभी ईषत् परिवर्तन होता है और कभी पूर्णत: परिवर्तित हो जाता है।

उपसर्ग धातुओं से जुड़कर शब्द के अर्थों में चमत्कार उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए, केवल एक धातु 'हृ—हरण करना' ले। इस हृ से 'हार' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है 'हरण'; किंतु जब इसमें उपसर्ग जुड़ जाते हैं, तब इसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। जैसे—

उपसर्ग ६ हार	निर्मित शब्द	अर्थ
अभि + हार	अभिहार	आक्रमण
अनु + हार	अनुहार	समानता
अप + हार	अपहार	उड़ा ले जाना
आ (आङ्) + हार	आहार	भोजन
उद् + हार	उद्धार	त्राण
उप + हार	उपहार	भेंट
प्र + हार	प्रहार	चोट
प्रति + हार	प्रतिहार	द्वारपाल
परि + हार	परिहार	निवारण
वि + हार	विहार	क्रीड़ा
सम् + हार	संहार	नाश

Tips 2. उपसर्ग की प्राप्ति—हिन्दी में पाँच भाषा-जातियों के उपसर्ग पाये जाते हैं—1. संस्कृत के, 2. हिन्दी के, 3. फारसी के, 4. अरबी के तथा 5. अँगरेजी के।

1. संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अति	अधिक	अतिकाल, अतिशय
अधि	अधिक, बड़ा	अधिकार, अधिराज
अनु	छोटा, पीछे	अनुदेश, अनुशासन, अनुकरण
अप	बुरा	अपमान, अपशब्द, अपहरण
अपि	निकट	अपिधान
अभि	अधिकता, समीपता	अभिदान, अभिभावक
अव	अनादर, हीनता	अवगत, अवनति, अवलोकन
उत्-उद्	उत्कर्ष, ऊपर	उद्घोष, उन्नति, उत्कंठा, उत्तम
उप	छोटा, निकट, समीप	उपकूल, उपकार, उपदेश
आ	थोड़ा, विपरीत, सीमा	आरक्त, आगमन, आजीवन
दुर्	कठिन, बुरा	दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार
दुस्	कठिन, बुरा	दुष्कर्म, दुष्कर
नि	अच्छी तरह, नीचे	निपात, निमग्न, निरोध
निर्	निषेध, बाहर	निर्भय, निर्वास
निस्	निषेध, बाहर	निश्छल, निश्चल
प्र	अधिक, आगे	प्रख्यात, प्रचार, प्रसार
परा	अधिक, उलटा	पराक्रम, पराजय, पराभव
प्रति	प्रत्येक, विरोध	प्रतिकूल, प्रतिध्वनि
परि	अतिशय, चारो ओर	परिक्रमा, परिशीलन
वि	अभाव, विशेषता	विज्ञान, विधवा, वियोग
सु	सुन्दर	सुकर्म, सुगम, सुवास
सम्	पूर्णता, सुन्दर	संग्रह, संतोष, संस्कार

2. हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अ	निषेध	अमोल
अध	आधा	अधजल, अधपका
अन	निषेध	अनपढ़
औ	निषेध, हीनता	औगुन, औघट
उन	एक कम	उनचास, उनतीस, उनासी
क, कु	बुरा	कपूत, कुकाठ, कुघड़ी, कुपात्र
दु	कम, बुरा	दुबला
बिन	अभाव	बिनदेखा, बिनब्याहा
भर	पूरा	भरपूर, भरपेट

3. फारसी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
आ	साथ	आगाह, आवारा
कम	थोड़ा, हीन	कमख्याल, कमजोर, कमसिन
खुश	अच्छा, श्रेष्ठ	खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशबू
दर	में	दरअसल, दरम्यान
ना	नहीं	नादान, नाचीज
नेक	अच्छा	नेकनाम, नेकनीयत
ब	अनुसार, साथ, से	बदस्तूर, बनाम
बद	बुरा	बदकिस्मत, बदनाम, बदबू
बर	ऊपर, पर, बाहर	बरखास्त, बरदाश्त
बा	साथ	बाकलम, बाकायदा
बे	बिना	बेअक्ल, बेइज्जत, बेईमान
सर	मुख्य	सरताज, सरपंच
हम	बराबर, अपना	हमउम्र, हमदर्द, हमराह
हर	प्रत्येक	हरतरह, हररोज, हरसाल

4. अरबी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अल्	यह कि	अलबत्ता, अलमस्त
ऐन	ठीक	ऐनमौका
गैर	निषेध, विरोध	गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरहाजिरी
फी	प्रत्येक	फीमर्द, फीसदी
बिल	साथ, खास	बिलकुल, बिलफर्ज
बिला	बिना	बिलादिमाग, बिलाशक
ला	बिना	लाजवाब, लापरवाह, लावारिस

CLICK HERE TO BUY BOOK

(v) विशेषणवाचक तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	शब्द	तद्धितांत रूप
अन्दाज	तीर	तीरन्दाज
आना	मर्द	मर्दाना
आवर	दस्त	दस्तावर
इन्दा	शर्म	शर्मिन्दा
ई	आसमान	आसमानी
ईन	नमक	नमकीन
ईना	कम	कमीना
कार	सलाह	सलाहकार
खोर	रिश्वत	रिश्वतखोर
गार	गुनाह	गुनाहगार
गीन	गम	गमगीन
तर	बद	बदतर
दाँ	कद्र	कद्रदाँ
दार	माल	मालदार
नवीस	नकल	नकलनवीस
नशीन	परदा	परदानशीन
नाक	दर्द	दर्दनाक
नुमा	किश्ती	किश्तीनुमा
बरदार	फरमा	फरमाबरदार
बाज	दगा	दगाबाज
बान	मेहर	मेहरबान
बार	अश्क	अश्कबार
बीन	तमाशा	तामाशबीन
मंद	अक्ल	अक्लमंद
वर	नाम	नामवर
वार	तारीख	तारीखवार
शुदा	शादी	शादीशुदा
साज	जिल्द	जिल्दसाज
सार	खाक	खाकसार

4. अरबी तद्धित प्रत्यय—हिन्दी में अरबी के कुछ तद्धित प्रत्यय गृहीत हुए हैं। इन्हें हम मुख्यत: निम्न चार भागों में बाँट सकते हैं—
(i) भाववाचक, (ii) कर्तृवाचक, (iii) विशेषणवाचक और (iv) स्त्रीवाचक।

प्रत्यय	शब्द	तद्धितांत रूप	भेद
इयत	इनसान	इनसानियत	भाववाचक
ची	खजाना	खजानची	कर्तृवाचक
आनी	रूह	रूहानी	विशेषणवाचक
ई	अरब	अरबी	विशेषणवाचक
आ	मालिक	मलिका	स्त्रीवाचक
म	बेग	बेगम	स्त्रीवाचक

5. अँगरेजी तद्धित प्रत्यय—हिन्दी में अँगरेजी के तद्धित प्रत्यय गृहीत हुए हैं। इन्हें हम मुख्यत: निम्न तीन भागों में बाँट सकते हैं—(i) भाववाचक, (ii) कर्तृवाचक तथा (iii) विशेषणवाचक।

प्रत्यय	शब्द	तद्धितांत रूप	भेद
इज्म	सोशल	सोशलिज्म	भाववाचक
अर	पेंट	पेंटर	कर्तृवाचक
इक	मेकेनाइज	मेकेनिक	कर्तृवाचक
आइट	नक्सल	नक्सलाइट	विशेषणवाचक
इयन	मराठा	मराठियन	विशेषणवाचक

अध्याय 26
संधि

Tips 1. संधि—दो अक्षरों के आपस में मिलने से उनके आकार और ध्वनि में जो विकार पैदा होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि और संयोग—संधि और संयोग में अंतर हैं। स्वरों से रहित व्यंजन के आपस में मिलने पर संयोग कहलाता है।

जैसे—क्य—यहाँ 'क्' और 'य' के बीच कोई स्वर नहीं है। ये दोनों व्यंजन बाद वाले ('य' में मिले हुए 'अ') स्वर के सहारे खड़े हैं। 'दूध' शब्द में चार वर्ण हैं—द्, ऊ, ध्, अ। इन चारों का संयोग होने पर 'दूध' शब्द बना है, यहाँ इन वर्णों के संयोग से इनमें कोई अंतर नहीं आया है।

संधि में अक्षर बदल जाते हैं, उनके उच्चारण में अंतर पड़ जाता है। 'जगत्' और 'नाथ' शब्द की संधि करने पर 'जगन्नाथ' शब्द बनता है। यहाँ जगत् शब्द के 'त्' का संधि के कारण 'न्' हो गया है।

जिन अक्षरों के बीच संधि हुई हो, उन्हें संधि के पहले के रूप में अलग-अलग करके रखना संधि-विच्छेद कहलाता है। जैसे—'जगन्नाथ' का संधि-विच्छेद 'जगत् + नाथ' होगा और 'रमेश' का 'रमा + ईश' होगा। जिन अक्षरों की संधि की जाती है उनके बीच '+' चिह्न देने की परिपाटी है।

संधि के कारण चार प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। यह हैं—लोप, आगम, विकार और प्रकृतिभाव। लोप में बीच की ध्वनि का लोप हो जाता है, जैसे—अत: + एव = अतएव। यहाँ सन्धि में विसर्ग का लोप हो गया है। आगम में नई ध्वनि का आगम हो जाता है; जैसे— वि + छेद = विच्छेद। यहाँ 'च्' का आगम हो गया है। विकार में दो ध्वनियाँ मिलकर नयी ध्वनि बन जाती है, जैसे—नै + अक = नायक। यहाँ 'ऐ + अ' मिलकर 'आय' हो गया है। प्रकृतिभाव में ध्वनि ज्यों-की-त्यों रह जाती है; जैसे—सुत + अम्ब = सुअम्ब।

Tips 2. संस्कृत संधि के भेद—संस्कृत संधि निम्न तीन प्रकार की होती हैं—

I. स्वर-संधि, II. व्यंजन-संधि और II. विसर्ग-संधि।

I. स्वर-संधि—दो स्वरों के आसपास आने से जो संधि या वर्ण-परिवर्तन होता है, उसे 'स्वर-संधि' कहते हैं। जैसे—रमा + ईश = रमेश। यहाँ 'रमा' शब्द का 'आ' तथा 'ईश' शब्द का 'ई' दोनों आसपास हैं, अत: इनकी संधि हो जाती है और 'आ' तथा 'ई' मिलकर 'ए' हो जाता है। 'आ' और 'ई' का मिलकर 'ए' होना ही यहाँ संधि है।

स्वर-संधि के निम्न पाँच भेद हैं—1. दीर्घ-संधि, 2. गुण-संधि, 3. वृद्धि-संधि, 4. यण्-संधि और 5. अयादि-संधि।

1. दीर्घ-संधि—ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ क्रमश: 'अ', 'इ', 'उ' हों, तो दोनों के स्थान पर एक सवर्ण दीर्घ वर्ण होना 'दीर्घ-संधि' है। जैसे—

(i) ह्रस्व एवं दीर्घ अकार की संधि

अ + अ = आ	ज्ञान + अभाव = ज्ञानाभाव
अ + आ = आ	धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
आ + अ = आ	तथा + अपि = तथापि
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय

CLICK HERE TO BUY BOOK

ताही समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो,
दावा बाँधि द्वेषिन पै बीरन लै जोट मैं।।
भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं,
किम्मति इहाँ लगि है जाकी झट-झोट मैं।।
ताव दै-दै मूँछन, कँगूरन पै पाँव दै-दै,
घाव दै-दै अरिमुख कूद परै कोट मैं।। —*भूषण*

6. भयानक : स्थायीभाव–भय

आलिंगन! फिर भय का क्रंदन! वसुधा जैसे काँप उठी।
वह अतिचारी, दुर्बल नारी, परित्राण-पथ नाप उठी।।
अंतरिक्ष में हुआ रुद्र हुंकार भयानक हलचल थी।
अरे आत्मजा प्रजा! पाप की परिभाषा बन शाप उठी।।
उधर गगन में क्षुब्ध हुई सब देव देवियाँ क्रोध भरी।
रुद्र नयन खुल गया अचानक ब्याकुल काँप रही नगरी।।
—*जयशंकर प्रसाद*

7. बीभत्स : स्थायीभाव–जुगुप्सा

सिर पर बैठ्यो काग आँख दाउ खात निकारत।
खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद कर धारत।।
गीध जाँघ कहँ खोदि-खोदि कै माँस उचारत।
स्वान आँगुरिन काटि-काटि कै खात विचारत।।
बहु चील नोच लै जात तुच मोद भर्‌यो सबको हियो।
मनु ब्रह्मभोज जजिमान कोउ आज भिखारिन कहँ दियो।।
—*भारतेंदु हरिश्चंद्र*

8. अद्‌भुत : स्थायीभाव–विस्मय

अंबर में कुंतल-जाल देख, पद के नीचे पाताल देख;
मुट्ठी में तीनों काल देख, मेरा स्वरूप विकराल देख;
सब जन्म मुझी से पाते हैं, फिर लौट मुझी में आते हैं।।
—*दिनकर*

9. शांत : स्थायीभाव–निर्वेद

मन फूला-फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे।
चार बाँस चरगजी मँगाया चढ़े काठ की घोरी।।
चारों कोने आग लगाया फूँकि दिया जस होरी।
हाड़ जरै जस लाकड़ी, केस जरै जस घास।।
सोना जैसी काया जरि गई, कोइ न आए पास।। —*कबीर*

10. वात्सल्य : स्थायीभाव–वत्सलता

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटरुनि चलत, रेनु-तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन, मादक मधुहि पिये।
कठुला कंठ, वज्र-केहरि-नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पन इहि सुख, का सत काल जिए।। —*सूरदास*

11. भक्ति : स्थायीभाव–ईश्वरविषयक प्रेम

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे।
कौने देव बराइ बिरद हित हठि-हठि अधम उधारे।
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब माया विबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे।। —*तुलसीदास*

अध्याय **45**

छंद

Tips 1. छंद—महर्षि पाणिनि के अनुसार जो आह्लादित करे, प्रसन्न करे, वह छंद है (चन्दति हृष्यति येन दीप्यते वा तच्छन्द)। उनके विचार से छंद 'चदि' धातु से निकला है। यास्क ने निरुक्त में 'छन्द' की व्युत्पत्ति 'छदि' धातु से मानी है जिसका अर्थ है 'संवरण या आच्छादन' (छन्दांसि छादनात्)। इन दोनों अतिप्राचीन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि छंदोबद्ध रचना केवल आह्लादकारिणी ही नहीं होती, वरन् वह चिरस्थायिनी भी होती है। जो रचना छंद में बँधी नहीं है, उसे हम याद नहीं रख पाते और जिसे याद नहीं रख पाते, उसका नष्ट हो जाना स्वाभाविक ही है। इन परिभाषाओं के अतिरिक्त सुगमता के लिए यह समझ लेना चाहिए कि जो पदरचना अक्षर, अक्षरों की गणना, क्रम, मात्रा, मात्रा की गणना, यति-गति आदि नियमों से नियोजित हो, वह छंदोबद्ध कहलाती है।

Tips 2. छंद के प्रकार—छंद निम्न प्रकार के होते हैं—

1. **वर्णिक छंद**—जिन छंदों में वर्णों की संख्या, क्रम, गणविधान तथा लघु-गुरु के आधार पर पदरचना होती है, उन्हें 'वर्णिक छंद' कहते हैं।
2. **मात्रिक छंद**—जिन छंदों में मात्राओं की संख्या, लघु-गुरु, यति-गति के आधार पर पदरचना होती है, उन्हें 'मात्रिक छंद' कहते हैं।
3. **मुक्त छंद**—इनमें न तो वर्णों की गणना होती है, न मात्राओं की। भाव-प्रवाह के आधार पर पदरचना होती है।
4. **लयवृत्त**—इसमें मात्राओं और वर्णों पर विशेष ध्यान न देकर, लय-ताल पर ध्यान दिया जाता है।

छंद से संबंधित कुछ पारिभाषिक शब्द निम्न हैं—

1. **वृत्त**—'छंद' को ही 'वृत्त' कहते हैं। अत: 'मात्रिक छंद' की जगह 'मात्रिक वृत्त' भी कहा जा सकता है।
2. **चरण या पाद**—छंद के चौथे भाग को 'चरण' या 'पाद' कहते हैं। मोटे तौर पर कविता की एक पंक्ति को चरण या पाद कह सकते हैं। 'कर मुनि चरन सरोज प्रनामा' यह एक पाद है। इसी प्रकार के चार पाद मिलकर एक चौपाई छंद का निर्माण करते हैं।
3. **वर्ण**—'वर्ण' और 'अक्षर' एक ही है। 'वर्णिक छंद' में चाहे ह्रस्व वर्ण हो या दीर्घ—वह एक ही वर्ण माना जाता है; जैसे—राम, रामा, रम, रमा इन चारों शब्दों में दो-दो ही वर्ण हैं।
4. **मात्रा**—किसी वर्ण के उच्चारण में जो अवधि लगती है, उसे 'मात्रा' कहते हैं। व्याकरण में मात्राएँ दो प्रकार की होती हैं—(a) ह्रस्व, (b) दीर्घ। छंद शास्त्र में ह्रस्व को 'लघु' तथा दीर्घ को 'गुरु' कहते हैं। छंदों में लघु मात्रा का इंगित पूर्णविराम जैसा (।) चिह्न देकर और गुरु मात्रा का इंगित विकारी जैसा (ऽ) देकर किया जाता है। लघु (ह्रस्व) के उच्चारण से दुगुनी अवधि गुरु (दीर्घ) के उच्चारण में लगती है।
5. **वर्ण और मात्रा में अंतर**—वर्ण में ह्रस्व और दीर्घ रहने पर वर्ण-गणना में कोई अंतर नहीं पड़ता है, किंतु मात्रा-गणना में ह्रस्व-दीर्घ से बहुत अंतर पड़ जाता है। उदाहरण के लिए, 'भरत' और 'भारती' शब्द को लें। दोनों में तीन वर्ण हैं, किंतु पहले में तीन मात्राएँ और दूसरे में पाँच मात्राएँ हैं।
6. **संख्या और क्रम**—वर्णों और मात्राओं की सामान्य गणना को 'संख्या' कहते हैं, किंतु कहाँ लघुवर्ण हों और कहाँ गुरुवर्ण हों—इसके नियोजन को 'क्रम' कहते हैं। वर्णिक छंद में न केवल

CLICK HERE TO BUY BOOK

सामान्य अंग्रेजी

चूँकि sitting in the corner एक शब्द-समूह है, जिसमें एक से अधिक शब्दों का प्रयोग हुआ है और इसमें Finite Verb नहीं है, अत: इस वाक्य में sitting in the corner लड़के की विशेषता प्रकट करने के कारण Adjective Phrase (विशेषण वाक्यांश) है।

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. A girl sitting in the corner is weeping.
2. The crow sitting in the tree flew away.
3. My daughter living in Rampur came.
4. His brother in Kanpur is ill.

उपर्युक्त वाक्यों को निम्न Table में दर्शाया गया है :

Sentence	Subject			Predicate
	Qualifier	Noun	Adjective Phrase	
1.	A	girl	sitting in the corner	is weeping
2.	The	crow	sitting in the tree	flew away
3.	My	daughter	living in Rampur	came
4.	His	brother	in Kanpur	is ill

नोट : *ऐसे वाक्यों में Noun के पश्चात् Adjective Phrase का प्रयोग होता है।*

Tips 8. जिस प्रकार Subject का विभाजन उसके विभिन्न भागों (Determiner, Adjective, Noun तथा Adjective Phrase आदि) में होता है, उसी प्रकार Predicate का विभाजन Verb, Object, Complement आदि में होता है।

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. Ram is a boy.
2. They were happy.
3. He told me a story.
4. Suresh got her a job.
5. I wrote him a letter.

उपर्युक्त वाक्यों को निम्न Table में दर्शाया गया है :

Sentence	Subject	Predicate			
		Verb	Object		Complement
			Indirect	Direct	
1.	Ram	is	.....	.....	a boy
2.	They	were	.....	.....	happy
3.	He	told	me	a story	.....
4.	Suresh	got	her	a job	.....
5.	I	wrote	him	a letter	.....

अध्याय 3
Parts of Speech

Tips 1. Parts of Speech (शब्द भेद) : वाक्य के प्रयोग के अनुसार शब्दों (Words) को भिन्न-भिन्न भागों में विभाजित किया जाता है। इन्हें शब्द-भेद (Parts of Speech) कहते हैं।

Parts of Speech आठ प्रकार के होते हैं :

1. Noun (संज्ञा), 2. Pronoun (सर्वनाम), 3. Adjective (विशेषण), 4. Verb (क्रिया), 5. Adverb (क्रिया-विशेषण), 6. Preposition (सम्बन्धसूचक शब्द), 7. Conjunction या Connector (संयोजक), 8. Interjection (विस्मयसूचक शब्द)।

अध्याय 4
Noun

Tips 1. Noun (संज्ञा) : किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान को प्रकट करने वाले शब्द को Noun कहते हैं। (A Noun is a word used as the name of a person, place or thing.) जैसे :

1. *Ashok* was a great king.
2. *Mumbai* is a big city.
3. The *sun* is very hot.
4. *Gold* is yellow.
5. *Honesty* is the best *policy*.

उपर्युक्त वाक्यों में Ashok, king, Mumbai, city, sun, gold, honesty तथा policy का प्रयोग Nouns की तरह हुआ है।

Tips 2. Kinds of Noun (संज्ञा के प्रकार) : Noun (संज्ञा) पाँच प्रकार के होते हैं :

1. Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
2. Common Noun (जातिवाचक संज्ञा)
3. Collective Noun (समूहवाचक संज्ञा)
4. Material Noun (द्रव्यवाचक संज्ञा)
5. Abstract Noun (भाववाचक संज्ञा)

Tips 3. Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा) : किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun) कहते हैं। (A Proper Noun is the name of some particular person, place or thing.) जैसे :

1. *Narendra Modi* is a famous leader.
2. The *Ganga* is a holy river.
3. The *Himalayas* lie to the North of India.
4. *Agra* is known as the city of the *Taj*.

उपर्युक्त वाक्यों में Narendra Modi, Ganga, Himalayas, India, Agra तथा Taj का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति, नदी, पर्वत, देश, नगर तथा स्मारक के लिए हुआ है। अत: ये सब Proper Noun हैं।

नोट :

(i) Proper Noun का पहला अक्षर Capital Letter से लिखा जाता है; जैसे India का I, Ganga का G, Himalayas का H, तथा Agra का A.

(ii) यदि किसी Proper Noun में दो या दो से अधिक शब्द समूह (Group of words) हों, तो प्रत्येक शब्द को लिखने में Capital Letter का प्रयोग किया जाता है; जैसे :
Narendra Modi, Subhash Chandra Bose.

Tips 4. Common Noun (जातिवाचक संज्ञा) : जातिवाचक संज्ञा वह नाम है, जो एक वर्ग या एक प्रकार के विभिन्न व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों को समान रूप से दिया जाये। (A Common Noun is a name given in common to every person, thing or place of the same class or kind.) जैसे :

1. Five *boys* are reading here.
2. A *girl* is playing in the *field*.
3. Some *villagers* are very dirty.
4. A *book* is on the table.
5. There is no *river* in the *town*.

CLICK HERE TO BUY BOOK

अध्याय 6
Gender

Tips 1. Genders निम्न चार प्रकार के होते हैं :

1. Masculine Gender, 2. Feminine Gender,
3. Common Gender, 4. Neuter Gender.

1. Masculine Gender से पुरुष (नर Male) का ज्ञान होता है; जैसे : Man, King, Peacock, Actor, Horse, Hero आदि।
2. Feminine Gender से स्त्री (मादा Female) का ज्ञान होता है; जैसे : Woman, Queen, Peahen, Actress, Mare, Heroine आदि।
3. Common Gender से नर और मादा (स्त्री और पुरुष Male and Female) दोनों का ज्ञान होता है; जैसे : Child, Friend, Pupil, Servant, Thief, Enemy, Cousin, Student, Baby, Infant, Neighbour आदि।
4. Neuter Gender से निर्जीव (Lifeless) वस्तु का ज्ञान होता है; जैसे : Book, Chair, Pen, Room, Tree, Paper, Radio, Box आदि।

अब निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. Mohan is a *man*.
2. Mohini is a *woman*.
3. Mohan has a *friend*. His name is Sohan.
4. Mohini has a *friend*. Her name is *Kamini*.
5. There is a *tree* in my garden. *Its* branches are tall.

उपर्युक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि Mohan का प्रयोग पुरुष के लिए और Mohini का प्रयोग स्त्री के लिए हुआ है।

तीसरे वाक्य में friend का प्रयोग पुरुष के लिए हुआ है।

चौथे वाक्य में friend का प्रयोग स्त्री के लिए हुआ है।

पाँचवें वाक्य में tree का प्रयोग निर्जीव के लिए हुआ है।

नोट :

(i) Collective, Material तथा Abstract Nouns, Neuter Gender के माने जाते हैं।

(ii) Young children और Lower animals का उल्लेख Neuter Gender की तरह होता है।

(iii) Masculine Gender का प्रयोग उन वस्तुओं के लिए होता है जो शक्ति (Strength) तथा हिंसा (Violence) की द्योतक हों; जैसे : Sun, Summer, Winter, Time और Death.

(iv) प्राय: Feminine Gender का प्रयोग उन वस्तुओं के लिए होता है, जो Beauty, Gentleness और Gracefulness की द्योतक हों; जैसे : Moon, Earth, Spring, Autumn, Nature और Liberty.

(v) Ship (पानी का जहाज) का प्रयोग सदैव Feminine Gender में होता है; जैसे : 1. The ship lost *her* way.

अध्याय 7
Case

Tips 1. Nouns द्वारा निम्न प्रकार के छ: कार्य किये जाते हैं :

(1) Subject of the Verb, (2) Object of the Verb or the Preposition, (3) Complement of the Verb, (4) Possessing the Noun, (5) Apposition to a Noun, (6) Being addressed.

इन कार्यों के आधार पर ही Nouns के Cases (कारकों) का निर्धारण किया जाता है।

Tips 2. **Case** (कारक) : कारक द्वारा यह प्रकट होता है कि किसी Noun का प्रयोग किस प्रकार किया गया है। कारक (Case) तीन प्रकार के होते हैं :

1. Nominative Case (कर्त्ता कारक), 2. Objective Case (कर्म कारक), और 3. Possessive Case (सम्बन्ध कारक)।

Tips 3. **Nominative Case** (कर्ता कारक) : जब किसी Noun का प्रयोग वाक्य की क्रिया (Verb) के कर्ता (Subject) के रूप में होता है, तब वह Noun Nominative Case में होता है। जैसे :

1. *Mohan* writes a letter. (मोहन एक पत्र लिखता है।)
2. *Sita* sang a song. (सीता ने एक गीत गाया।)

यहाँ पहले वाक्य में Mohan वाक्य की क्रिया (Verb) writes का कर्ता है। अत: Mohan का प्रयोग Nominative Case में हुआ है।

दूसरे वाक्य में Sita वाक्य की क्रिया (Verb) sang का कर्ता है। अत: Sita का प्रयोग Nominative Case में हुआ है।

नोट : *Subject का पता लगाने के लिए वाक्य की क्रिया में 'कौन' या 'किसने' (Who) लगाकर प्रश्न कीजिए; जैसे :*

प्रश्न : पत्र कौन लिखता है? उत्तर : Mohan

अत: Mohan वाक्य की क्रिया writes का Subject है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि Mohan का प्रयोग Nominative Case में हुआ है। इसी प्रकार, दूसरे वाक्य Sita का प्रयोग Nominative Case में हुआ है।

Tips 4. **Objective Case** (कर्म कारक) : जब किसी Noun का प्रयोग वाक्य की क्रिया (Verb) के कर्म (Object) के रूप में हो, तब उस Noun का प्रयोग Objective Case में होता है। जैसे :

1. Ram eats a *mango*. (राम एक आम खाता है।)
2. Mohan played *cricket*. (मोहन ने क्रिकेट खेली।)
3. My father gave *me* a *book*. (मेरे पिताजी ने मुझे एक पुस्तक दी।)

यहाँ पहले वाक्य में Mango, दूसरे वाक्य में Cricket और तीसरे वाक्य में Me और Book का प्रयोग Verb (क्रिया) के कर्म (Object) की तरह किया गया है।

अत: Mango, Cricket, Me और Book का प्रयोग Objective Case में हुआ है।

***नोट** : Object का पता लगाने के लिए Verb में 'क्या' या 'किसको' लगाकर प्रश्न कीजिए। उत्तर में Object का पता लग जायेगा।*

यहाँ पहले वाक्य में क्रिया (Verb) eats है। अब eats में क्या लगाकर प्रश्न कीजिए।

CLICK HERE TO BUY BOOK

Tips 11. जो संज्ञा किसी व्यक्ति या वस्तु को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त हो, वह Vocative Case में होती है। (A Noun used to name a person or thing addressed is in the Vocative Case.)

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. *Boys*, do your work. (बच्चों, अपना कार्य करो।)
2. Come into the garden, *Hari*. (हरी, बाग में आओ।)

यहाँ पहले वाक्य में Boys को और दूसरे वाक्य में Hari को सम्बोधित किया गया है।

जिस Noun को सम्बोधित किया जाये, उसका Vocative Case होता है अर्थात् ऐसे Nouns का प्रयोग Nominative of Address में होता है।

अध्याय 8
Pronoun

Tips 1. **Pronoun** (सर्वनाम) : सर्वनाम वह शब्द है, जिसका प्रयोग Noun के स्थान पर होता है। (A Pronoun is a word used in place of a Noun.) जैसे :

1. Hari is absent because *he* is ill.
2. The books are where you left *them*.

उपर्युक्त वाक्यों में he और them सर्वनाम (Pronoun) हैं, क्योंकि he का प्रयोग Hari के लिए और them का प्रयोग books के लिए हुआ है।

Tips 2. Pronouns मुख्यत: निम्न नौ प्रकार के होते हैं :

1. Personal Pronoun (पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. Reflexive Pronoun (निजवाचक सर्वनाम)
3. Emphatic Pronoun (दृढ़तासूचक सर्वनाम)
4. Reciprocal Pronoun (परस्परवाचक सर्वनाम)
5. Demonstrative Pronoun (संकेतवाचक सर्वनाम)
6. Interrogative Pronoun (प्रश्नवाचक सर्वनाम)
7. Indefinite Pronoun (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)
8. Distributive Pronoun (विभागसूचक सर्वनाम)
9. Relative Pronoun (सम्बन्धवाचक सर्वनाम)

Tips 3. **Personal Pronoun** (पुरुषवाचक सर्वनाम) : इस सर्वनाम से पुरुष, स्त्री या वस्तु का बोध होता है; जैसे :

1. *I* am a student. (मैं विद्यार्थी हूँ।)
2. *You* are a teacher. (तुम अध्यापक हो।)
3. *We* played cricket. (हमने क्रिकेट खेली।)
4. *They* will go to Agra. (वे आगरा जायेंगे।)
5. *He* passed the examination. (वह परीक्षा में सफल हो गया।)

उपर्युक्त वाक्यों में I, You, We, They तथा He का प्रयोग Personal Pronoun की तरह हुआ है।

Tips 4. **Personal Pronoun** तीन प्रकार के होते हैं :

1. First Person (उत्तम पुरुष)
2. Second Person (मध्यम पुरुष)
3. Third Person (अन्य पुरुष)

1. **First Person (उत्तम पुरुष) :** इसका प्रयोग बात करने वाले के लिए होता है; जैसे : I, We (और इनसे बनने वाले शब्द)। I एकवचन (Singular Number) है और We बहुवचन (Plural Number) है।
2. **Second Person (मध्यम पुरुष) :** इसका प्रयोग बात सुनने वाले के लिए होता है; जैसे : You. Second Person में केवल You (और इससे बनने वाले शब्द तुम, आप) आता है। जब You का प्रयोग छोटे व्यक्ति के लिए किया जाता है, तो उसका अनुवाद 'तुम' होता है, और जब You का प्रयोग बड़े व्यक्ति (सम्मानित व्यक्ति) के लिए किया जाता है, तो उसका अनुवाद 'आप' होता है; जैसे :
   1. *You* are a good boy. (तुम अच्छे लड़के हो।)
   2. *You* taught us English. (आपने हमें अंग्रेजी पढ़ायी थी।)
3. **Third Person (अन्य पुरुष) :** इसका प्रयोग उस व्यक्ति, वस्तु, जानवर या पक्षी के लिए होता है, जिसके विषय में बातें की जा रही हों या बातें की गयी हों या बातें की जाने वाली हों। Third Person में He, She, It और They (तथा इनसे बनने वाले शब्द) आते हैं।

   He का प्रयोग Singular Number तथा Masculine Gender में होता है। She का प्रयोग Singular Number तथा Feminine Gender में होता है।

   It का प्रयोग Singular Number तथा Neuter Gender में होता है। They का प्रयोग Plural Number में होता है।

Tips 5. Personal Pronoun के Case (कारक) के निर्धारण को समझने के लिए निम्न तालिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए :

Pronoun (सर्वनाम)	**Nominative Case** (कर्ता कारक)	**Objective Case** (कर्म कारक)	**Possessive Case** (सम्बन्ध कारक)
I	I	me	my, mine
We	we	us	our, ours
You	you	you	your, yours
He	he	him	his
She	she	her	her, hers
It	it	it	its
They	they	them	their, theirs

Possessive Case में :

I के साथ my, mine का प्रयोग होता है; We के साथ our, ours का प्रयोग होता है; You के साथ your, yours का प्रयोग होता है; She के साथ her, hers का प्रयोग होता है; They के साथ their, theirs का प्रयोग होता है; लेकिन He के साथ केवल his का और It के साथ केवल its का ही प्रयोग होता है। जैसे :

1. This book is *mine*. [Pronoun की तरह]
   That is *yours*. [Pronoun की तरह]
2. I respect *my* teacher. [Adjective की तरह]
   We help *our* friends. [Adjective की तरह]
3. *His* book is dirty. [Adjective की तरह]
   This is *his*. [Adjective की तरह]

CLICK HERE TO BUY BOOK

4. **Present Participle Form :** क्रिया की —ing form का प्रयोग Present Continuous, Past Continuous, Future Continuous एवं Present Prefect Continuous, Past Perfect Continuous, Future Perfect Continuous में होता है।

Tips 13. Verbs के मुख्य तीन विभिन्न रूप निम्न हैं :

(i) ऐसे verbs जिनके तीनों रूप समान हैं (Verbs in which all the three parts are identical); जैसे :

Present (v_1)	Past (v_2)	Past Participle (v_3)
bet	bet/betted	bet/betted
bid	bid/bade	bid/bidden
broadcast	broadcast	broadcast
burst	burst	burst
cast	cast	cast
cost	cost	cost
cut	cut	cut
hit	hit	hit
hurt	hurt	hurt
knit	knit/knitted	knit/knitted
let	let	let
put	put	put
quit	quit/quitted	quit/quitted
read	read	read
set	set	set
shut	shut	shut
split	split	split
spread	spread	spread
thrust	thrust	thrust
upset	upset	upset
wed	wed/wedded	wed/wedded

(ii) ऐसे verbs जिनके दो रूप समान हैं (Verbs in which two parts are identical); जैसे :

Present (v_1)	Past (v_2)	Past Participle (v_3)
beat	beat	beaten
become	became	become
bend	bent	bent
beseech	besought	besought
bind	bound	bound
bleed	bled	bled
breed	bred	bred
bring	brought	brought
build	built	built
burn	burnt/burned	burnt/burned
buy	bought	bought
catch	caught	caught
climb	climbed	climbed
cling	clung	clung
come	came	come
creep	crept	crept
deal	dealt	dealt
dig	dug	dug
dive	dived	dived
dream	dreamt/dreamed	dreamt/dreamed

Present (v_1)	Past (v_2)	Past Participle (v_3)
feed	fed	fed
feel	felt	felt
fight	fought	fought
find	found	found
flee	fled	fled
fling	flung	flung
flow	flowed	flowed
get	got	got/gotten
grind	ground	ground
hang	hung/hanged	hung
have	had	had
hear	heard	heard
hold	held	held
keep	kept	kept
kneel	knelt/kneeled	knelt/kneeled
lay	laid	laid
lead	led	led
lean	leant	leant
leap	leapt/leaped	leapt/leaped
learn	learnt/learned	learnt/learned
leave	left	left
lend	lent	lent
light	lit/lighted	lit/lighted
loss	lost	lost
loose	loosed	loosed
make	made	made
mean	meant	meant
melt	melted	melted
mislay	mislaid	mislaid
overcome	overcame	overcome
pay	paid	paid
prove	proved	proved/proven
run	ran	run
say	said	said
seek	sought	sought
sell	sold	sold
send	sent	sent
shine	shone	shone
shoot	shot	shot
sit	sat	sat
sleep	slept	slept
slide	slid	slid
smell	smelt/smelled	smelt/smelled
speed	sped	sped
spell	spelt/spelled	spelt/spelled
spend	spent	spent
spill	spilt/spilled	spilt/spilled
spin	spun	spun
spit	spat	spat
stick	stuck	stuck
sting	stung	stung
stop	stopped	stopped
strike	struck	struck
string	strung	strung
sweep	swept	swept

CLICK HERE TO BUY BOOK

Present (v_1)	Past (v_2)	Past Participle (v_3)
swing	swung	swung
teach	taught	taught
tell	told	told
think	thought	thought
tread	trod	trod/trodden
understand	understood	understood
weep	wept	wept
win	won	won
wind	wound	wound
withhold	withheld	withheld
wring	wrung	wrung

(iii) ऐसे verbs जिनके तीनों रूप अलग-अलग हैं (Verbs in which all the three parts are different); जैसे :

Present (v_1)	Past (v_2)	Past Participle (v_3)
arise	arose	arisen
awake	awoke	awoken/awaked
be	was	been
bear	bore	born/borne
begin	began	begun
break	broke	broken
bid	bade	bidden
bite	bit	bitten
blow	blew	blown
choose	chose	chosen
do	did	done
draw	drew	drawn
drink	drank	drunk
drive	drove	driven
eat	ate	eaten
fall	fell	fallen
fly	flew	flown
forbid	forbade	forbidden
forget	forgot	forgotten
forgive	forgave	forgiven
freeze	froze	frozen
give	gave	given
go	went	gone
grow	grew	grown
hide	hid	hidden/hid
know	knew	known
lie	lay	lain
mistake	mistook	mistaken
ride	rode	ridden
ring	rang	rung
rise	rose	risen
saw	sawed	sawn/sawed
see	saw	seen
shake	shook	shaken
show	showed	shown/showed
shrink	shrank	shrunk
sing	sang	sung
sink	sank	sunk
speak	spoke	spoken
spring	sprang	sprung

Present (v_1)	Past (v_2)	Past Participle (v_3)
steal	stole	stolen
stink	stank	stunk
strive	strove	striven
swear	swore	sworn
swell	swelled	swollen
swim	swam	swum
take	took	taken
tear	tore	torn
throw	threw	thrown
undergo	underwent	undergone
wake	woke	woken
wear	wore	worn
weave	wove	woven
withdraw	withdrew	withdrawn
write	wrote	written

अध्याय 11

Subject-Verb Agreement

Tips 1. Subject-Verb Concord को Agreement of the Verb with the Subject भी कहते हैं। इसका तात्पर्य है कि वाक्य की क्रिया वाक्य के कर्ता के अनुसार ही होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि यदि कर्ता बहुवचन का है, तो वाक्य की क्रिया भी बहुवचन की होनी चाहिए और यदि कर्ता एकवचन का है, तो क्रिया भी एकवचन की होनी चाहिए; जैसे :

1. The boys *eat* fruit.
   उपर्युक्त वाक्य में Boys बहुवचन का कर्ता है, तो Eat क्रिया भी बहुवचन की है।
2. The boy *eats* fruits.
   उपर्युक्त वाक्य में Boy एकवचन का कर्ता है, तो Eats क्रिया भी एकवचन की है।

Tips 2. एकवचन एवं बहुवचन से संबंधित कुछ नियम निम्नलिखित हैं :

- **नियम 1.** First Form (मूल रूप) की क्रिया बहुवचन की मानी जाती है। इसे एकवचन की क्रिया बनाने के लिए प्राय: -s या -es जोड़ते हैं; जैसे : Read से reads; Come से comes; Sing से sings आदि।
- **नियम 2.** I एकवचन का कर्ता है और You एकवचन तथा बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है, किन्तु I और You के साथ Present Indefinite Tense में बहुवचन की क्रिया प्रयुक्त होती है; जैसे :
  1. I *write* a letter.
  2. You *write* a letter.
     (यदि You का प्रयोग एक व्यक्ति के लिए हुआ है।)
  3. You *write* letters.
     (यदि You का प्रयोग एक से अधिक व्यक्तियों के लिए हुआ है।)
- **नियम 3.** Present Continuous Tense में I के साथ Am तथा You के साथ Are का प्रयोग होता है; जैसे :
  1. I *am* reading a book.
  2. You *are* playing cricket.

CLICK HERE TO BUY BOOK

(ii) Subject + V_2 + as if/as though + subject + past perfect; जैसे :

1. She looked as if she had seen a ghost.

➢ **नियम 13.** As soon as, because, unless, until, if, when आदि से शुरू होने वाले Clause में Future tense का प्रयोग नहीं होता है; जैसे :

1. As soon as *I reach* Kanpur, I will send you the books you have asked for.

➢ **नियम 14.** कुछ ऐसे Verbs हैं, जिन्हें Verbs of perception कहा जाता है। इस तरह के Verbs like, feel, hear, see, think, know, understand आदि हैं। ऐसे Verbs का प्रयोग Present Continuous रूप में नहीं किया जाता है; जैसे :

1. He does not even *understand* simple equations.

➢ **नियम 15.** When, while, before, till, after आदि Conjunctions से शुरू होने वाले Sub-ordinate clause यदि future को बतला रहे हों, तो इनके साथ वैसे verbs का प्रयोग नहीं किया जाता है, जो futurity को बतलाएँ; जैसे :

1. When *I see* him I will give your message.
2. Before *you come*, he will have left the class room.

अध्याय 14

Negative and Interrogative Sentence

Tips 1. Affirmative Sentences (अर्थात् Positive Sentences) से Negative Sentences बनाने के कुछ मुख्य नियम निम्नलिखित हैं :

➢ **नियम 1.** Present Indefinite Tense (Simple Present) में I, We, You, They तथा Plural Nouns के साथ Negative बनाने के लिए Do not के साथ Verb की First Form (क्रिया का मूल रूप) लिखी जाती है; जैसे :

	Positive	Negative
1.	I *write* a letter.	I *do not* write a letter.
2.	You *work* hard.	You *do not* work hard.
3.	They *play* cricket.	They *do not* play cricket.
4.	They *buy* mangoes.	They *do not* buy mangoes.

➢ **नियम 2.** Present Indefinite Tense (Simple Present) में He, She, It तथा Singular Nouns (एकवचन की संज्ञा) के साथ Does not लगाकर मुख्य क्रिया (Main Verb) की First Form का प्रयोग होता है; जैसे :

	Positive	Negative
1.	He *plays* cricket.	He *does not play* cricket.
2.	She *bathes* in the Ganga.	She *does not bathe* in the Ganga.
3.	The bird *flies*.	The bird *does not fly*.
4.	It *runs* on the road.	It *does not run* on the road.

नोट : *Negative Sentence बनाते समय plays, bathes, flies, runs को play, bathe, fly और run में परिवर्तित कर दिया गया है, क्योंकि Does not के साथ मुख्य क्रिया (Main Verb) की First Form आती है।*

➢ **नियम 3.** Past Indefinite Tense (Simple past) के वाक्यों को Negative Sentences में बदलने के लिए प्रत्येक कर्ता के साथ Did not का प्रयोग होता है तथा Did not के साथ मुख्य क्रिया की First Form आती है; जैसे :

	Positive	Negative
1.	He *went* to school.	He *did not go* to school.
2.	Ram *wrote* a letter.	Ram *did not write* a letter.
3.	You *helped* my brother.	You *did not help* my brother.
4.	They *caught* a thief.	They *did not catch* the thief.

अब निम्न वाक्य पर ध्यान दीजिए :

1. He never helped me. (Negative)

Past Indefinite Tense के Negative Sentence—Never से भी बन जाते हैं। Never के साथ Verb की Second Form आती है।

➢ **नियम 4.** Present Indefinite Tense में Is, Am, Are का प्रयोग Linking Verb की तरह से भी होता है, अर्थात् ये वाक्य की मुख्य क्रिया (Main Verb) होती हैं। ऐसी दशा में Negative वाक्य बनाने के लिए इन Verbs के बाद Not लगा दिया जाता है; जैसे :

	Positive	Negative
1.	I *am* poor.	I *am not* poor.
2.	You *are* weak.	You *are not* weak.
3.	Some mangoes *are* sweet.	Some mangoes *are not* sweet.
4.	Sita *is* intelligent.	Sita *is not* intelligent.

➢ **नियम 5.** Past Indefinite Tense में Was, Were का प्रयोग Linking Verb की तरह से भी होता है, अर्थात् ये वाक्य की मुख्य क्रिया (Main Verb) की तरह से भी प्रयुक्त हो जाती हैं। ऐसी दशा में Negative वाक्य बनाने के लिए इन Verbs (क्रियाओं) के साथ Not जोड़ दिया जाता है; जैसे :

	Positive	Negative
1.	Ram *was* a good boy.	Ram *was not* a good boy.
2.	You *were* rich.	You *were not* rich.
3.	Some soldiers *were* strong.	Some soldiers *were not* strong.
4.	The stories *were* interesting.	The stories *were not* interesting.

➢ **नियम 6.** सहायक क्रियाओं (Helping Verbs) के रूप में Is, Am, Are, Was, Were, Can, Could, May, Might, Will, Shall, Would, Must, Should, Have, Has, Had का प्रयोग होता है। ऐसी दशा में Negative वाक्य की रचना करने के लिए इन Verbs के बाद में Not जोड़ देते है; जैसे :

	Positive	Negative
1.	He *is calling* you.	He *is not calling* you.
2.	I *am reading* a book.	I *am not reading* a book.
3.	We *are washing* our clothes.	We *are not washing* our clothes.
4.	He *was eating* a mango.	He *was not eating* a mango.
5.	You *were buying* fruits yesterday.	You *were not buying* fruits yesterday.

CLICK HERE TO BUY BOOK

➢ **नियम 2.** Can, Could, May, Might, Shall, Should, Will, Would, Must, Have, Has, Had आदि क्रियायें यदि सहायक क्रिया के रूप में आयी हों, तो इन क्रियाओं (Verbs) को वाक्य के कर्ता (Subject) से पहले लिखने से प्रश्नवाचक वाक्य (Question Form) बन जाता है; जैसे :

	Assertive	Interrogative
1.	He *has sent* a telegram to his father.	*Has* he *sent* a telegram to his father ?
2.	We *should work* hard.	*Should* we *work* hard ?
3.	You *can run* fast.	*Can* you *run* fast ?
4.	I *shall help* you.	*Shall* I *help* you ?
5.	They *may go* home.	*May* they *go* home ?

➢ **नियम 3.** Present Indefinite Tense के वाक्यों में I, We, You, They अथवा Plural Nouns के साथ सहायक क्रिया Do का प्रयोग Subject (कर्ता) से पहले किया जाता है और कर्ता के बाद में Verb (क्रिया) की First Form लिखी जाती है; जैसे :

	Assertive	Interrogative
1.	They *go* to market.	*Do* they *go* to market ?
2.	We *play* cricket daily.	*Do* we *play* cricket daily ?
3.	I *sing* a song.	*Do* I *sing* a song ?
4.	You *bathe* daily in the river.	*Do* you *bathe* daily in the river ?

➢ **नियम 4.** Present Indefinite Tense के वाक्यों में यदि He, She, It अथवा Singular Nouns वाक्य के कर्ता (Subject) हों, तो He, She, It आदि के पहले Does लगाकर Subject (कर्ता) के पश्चात् Verb की First Form लिखी जाती है; जैसे :

	Assertive	Interrogative
1.	Our examination *begins* next week.	*Does* our Examination *begin* next week ?
2.	He *cries* when he is hurt.	*Does* he *cry* when he is hurt ?
3.	Mohan *plays* cricket.	*Does* Mohan *play* cricket ?
4.	He *goes* home today.	*Does* he *go* home today ?

नोट : *सहायक क्रिया Does के प्रयुक्त होने पर मुख्य क्रिया की First Form का ही प्रयोग होता है अर्थात् Assertive Sentence की क्रिया के अन्त का s या es हट जाता है। जैसे उपर्युक्त वाक्य 1 में begins का s हट गया; वाक्य 2 में cries (cry + es = cries) cry बना; वाक्य 3 में plays का s तथा वाक्य 4 में goes का es हट गया।*

➢ **नियम 5.** यदि वाक्य Past Indefinite Tense का हो, तो प्रश्नवाचक वाक्य बनाने के लिए प्रत्येक Subject (कर्ता) में पहले Did लगाया जाता है और कर्ता के बाद वाक्य की मुख्य क्रिया की First Form आती है; जैसे :

	Assertive	Interrogative
1.	I *taught* my brother.	*Did* I *teach* my brother ?
2.	He *went* away.	*Did* he *go* away ?
3.	I *bought* a cycle.	*Did* I *buy* a cycle ?
4.	He *bought* two eggs.	*Did* he *buy* two eggs ?
5.	He *wrote* two letters.	*Did* he *write* two letters ?

➢ **नियम 6.** Present Indefinite Tense तथा Past Indefinite Tense के वाक्य यदि Negative (निषेधात्मक अर्थात् नकारात्मक) हैं, तो Present Indefinite Tense में Subject के अनुसार Do/Does लगता है और Past Indefinite में प्रत्येक कर्ता के साथ Did का प्रयोग होता है। Do, Does, Did को कर्ता से पहले लिखा जाता है तथा कर्ता के बाद Not आता है। ऐसे वाक्यों में Verb में परिवर्तन नहीं होता है; जैसे :

	Assertive	Interrogative
1.	I *do not teach* my brother.	*Do* I *not teach* my brother ?
2.	He *does not play* cricket.	*Does* he *not play* cricket ?
3.	They *did not play* well.	*Did* they *not play* well ?
4.	I *did not help* him.	*Did* I *not help* him ?

Tips 6. प्रश्नवाचक वाक्यों (Interrogative Sentences या Question form) को विधिसूचक वाक्यों (Assertive Sentences या Statements) में परिवर्तित किया जा सकता है। Modern English में Interrogative Sentence को Question Form और Assertive Sentence को Statement कहा जाता है।

इस प्रकार के परिवर्तन को समझने के लिए निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

	Interrogative	Assertive
1.	*Is* he a good boy ?	He *is* a good boy.
2.	*Are* those boys honest ?	Those boys *are* honest.
3.	*Can* they swim ?	They *can swim*.
4.	*May* I *take* your pen ?	I *may take* your pen.
5.	*Do* they *know* you ?	They *know* you.
6.	*Does* he *look* worried ?	He *looks* worried.
7.	*Are* the dogs *barking* ?	Dogs *are barking*.
8.	*Does* Mr. Singh *teach* us history ?	Mr. Singh *teaches* us history.
9.	*Did* our team *win* the match ?	Our team *won* the match.
10.	*Have* they *seen* the Taj ?	They *have seen* the Taj.

अध्याय 15
Voice

Tips 1. Voice निम्नलिखित दो प्रकार की होती हैं :

1. Active Voice, तथा 2. Passive Voice

1. Active Voice में क्रिया (Verb) द्वारा कर्ता (Subject) को प्रधानता दी जाती है। इनमें कर्ता (Subject) स्वयं कार्य करता है।
2. Passive Voice में क्रिया (Verb) द्वारा कर्म (Object) को प्रधानता दी जाती है।

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

	Active Voice	Passive Voice
1.	Gopal *teaches* Mohan.	Mohan *is taught* by Gopal.
2.	I *write* a letter.	A letter *is written* by me.
3.	Ram *killed* Ravan.	Ravan *was killed* by Ram.
4.	He *will read* this book.	This book *will be read* by him.

CLICK HERE TO BUY BOOK

1. Yesterday's test was so *hard* that nobody passed.

Hardly का अर्थ 'मुश्किल से' होता है और यह adverb है; जैसे :

1. He *can hardly* walk.

➢ **नियम 33.** *Direct/Directly* का प्रयोग

Direct एक adjective है और इसका अर्थ है moving in a straight line towards a place without changing direction; जैसे :

1. Can you tell me if there is any *direct* route to Mumbai?

Direct एक adverb भी है; जैसे :

1. You can pay *directly* from your bank account.

Directly एक adverb है और इसका अर्थ 'पूर्णतया' या 'तुरन्त' होता है; जैसे :

1. He was looking *directly* at us.

अध्याय 17
Preposition

Tips 1. Preposition (सम्बन्धसूचक शब्द) : Preposition वह शब्द है, जो किसी Noun या Pronoun के पहले प्रयुक्त होकर उस Noun या Pronoun द्वारा सूचित व्यक्ति या वस्तु का सम्बन्ध अन्य किसी Noun या Pronoun से प्रदर्शित करता है। (A Preposition is a word used with a Noun or a Pronoun to show how the person or thing denoted by the Noun or Pronoun stands in relation to something else.)

1. There is a cow *in* the garden.
2. The monkey sat *on* a wall.
3. He has a chain *of* gold.
4. I am *with* you.

यहाँ उपर्युक्त वाक्यों में in, on, of, with Prepositions हैं।

मुख्य Prepositions निम्नलिखित हैं :

In, on, at, of, with, by, from, to, into, off, out, till, for, up आदि।

Tips 2. Prepositions तीन प्रकार के होते हैं :

1. **Simple Preposition :** मुख्य Simple Prepositions निम्नलिखित हैं : In, on, at, to, from, with, by आदि।
2. **Compound Preposition :** मुख्य Compound Prepositions निम्नलिखित हैं : About, across, among, between, beside, before आदि।
3. **Phrase Preposition :** मुख्य Phrase Prepositions निम्नलिखित हैं : According to, in spite of, on account of, in front of, in order to, for the sake of, by means of, with reference to, in addition to, due to आदि।

Tips 3. 'Preposition' से सम्बन्धित कुछ प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं

➢ **नियम 1.** About का प्रयोग

About का प्रयोग 'विषय में,' 'चारों ओर', 'लगभग' और 'इधर-उधर' के अर्थ में होता है; जैसे :

1. Say something *about* your activities. (विषय में)
2. She had a gold chain *about* her neck. (चारों ओर)
3. It weights *about* the same as coffee. (लगभग)
4. She got up and wandering *about*. (इधर-उधर)

➢ **नियम 2.** About to का प्रयोग

About to 'भविष्य का' बोधक है और इसका अर्थ be shortly going to होता है; जैसे :

1. The train is *about to* start.

➢ **नियम 3.** Above का प्रयोग

Above से 'ऊपर' और 'अधिक' का बोध होता है; जैसे :

1. I was third, there were two *above* me. (ऊपर)
2. His salary must be *above* ₹10,000. (अधिक)

➢ **नियम 4.** According to का प्रयोग

According to का अर्थ 'in keeping with' या 'अनुसार' होता है; जैसे :

1. *According to* the forecast, the weather is going to be bad.
2. Games must be played *according to* the rules.

➢ **नियम 5.** Across का प्रयोग

Across का अर्थ 'एक ओर से दूसरी ओर होकर गुजरना' या 'अचानक मुलाकात होना' होता है; जैसे :

1. He ran *across* the field.

➢ **नियम 6.** On account of का प्रयोग

On account of का अर्थ 'because of' या 'कारण से' होता है; जैसे :

1. He cannot be understood *on account of* his accent.

➢ **नियम 7.** After का प्रयोग

After से 'बाद', 'पीछे' और 'उपयुक्त' का बोध होता है। यह sequence को बतलाता है; जैसे :

1. I like coffee *after* dinner. (बाद)
2. He went *after* him. (पीछे)
3. The meal is *after* my heart. (उपयुक्त)

➢ **नियम 8.** Against का प्रयोग

तुलना, नजदीक और विरोध या प्रतिकूल के अर्थों में Against का प्रयोग होता है; जैसे :

1. Four thousand students failed in Intermediate this year against three thousand in the last year. (तुलना)
2. Keep the table against the wall. (नजदीक)
3. He is contesting election against me. (विरोध)
4. He is operating against his wishes. (विरोध)

➢ **नियम 9.** Along का प्रयोग

Along किसी भी line में movement या position का बोध कराता है; जैसे :

1. There were people fishing all *along* the river.
2. They have placed guards all *along* the frontier.

➢ **नियम 10.** Around का प्रयोग

Around का प्रयोग 'वृत्ताकार गति' (Circular motion), 'लगभग' और 'इधर-उधर' के अर्थों में होता है; जैसे :

1. A crowd of people gathered around the speaker. (वृत्ताकार)
2. Your brother must be *around* my age. (लगभग)
3. All *around* the lake boats were sailing. (इधर-उधर)

CLICK HERE TO BUY BOOK

➢ **नियम 42.** Due to/Owing to/Because of का प्रयोग

Due to एक Adjective है। अत: इसके बाद Noun या Pronoun का प्रयोग होता है; जैसे :

1. His delay was *due to* an accident.

Due to से कभी भी वाक्य शुरू नहीं किया जाता है।

Owing to और Because of का अर्थ एक ही है और दोनों का preposition की तरह प्रयोग होता है; जैसे :

1. The factory was forced to close *owing to* a lack of capital.
2. The train was cancelled *because of* snow on the line.

➢ **नियम 43.** In/Below/Under का प्रयोग

In का अर्थ 'में' होता है; जैसे :

1. He is *in* his room.

Below का अर्थ 'नीचे' होता है; जैसे :

1. He is *below* the average in the class.

Under का अर्थ vertically below होता है; जैसे :

1. There is a black spot *under* his right *eye*.

➢ **नियम 44.** For/During का प्रयोग

For और During दोनों समय की अवधि को बतलाते हैं। For में यह अवधि अनिश्चित होती है तथा During में यह अवधि निश्चित होती है; जैसे :

1. I have been ill *for* a fortnight.
2. She never goes out *during* the day.

➢ **नियम 45.** Order, attach, resist, pervade, request, succeed, inform, reach, resemble, assist, violate, combat, despite, afford, describe, accompany आदि कुछ ऐसे verbs हैं, जिनके बाद active voice में किसी preposition का प्रयोग नहीं होता है; जैसे :

1. You should not have *violated* the rules of the bank.

➢ **नियम 46.** Today, tomorrow, yesterday, the following day, the next day आदि कुछ ऐसे शब्द या अभिव्यक्तियाँ हैं, जिनके साथ on, at, in आदि prepositions का प्रयोग नहीं होता है; जैसे :

1. He will go there *tomorrow*.

अध्याय 18
Conjunction

Tips 1. Conjunction (समुच्चयबोधक अव्यय) : समुच्चयबोधक अव्यय (संयोजक) वह शब्द है, जो दो शब्दों या वाक्यों को आपस में जोड़ता है। (A Conjunction is a word that joins words or sentences together.)

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. Ram *and* Shyam are friends.
2. I called him *but* he did not hear me.

उपर्युक्त वाक्यों में and और but का प्रयोग Conjunction (समुच्चयबोधक अव्यय अर्थात् संयोजक) की तरह हुआ है।

यहाँ पहले वाक्य में and द्वारा दो शब्दों (i) Ram और (ii) Shyam को जोड़ा गया है तथा दूसरे वाक्य में but द्वारा दो वाक्यों (i) I called him. और (ii) He did not hear me. को एक-दूसरे से जोड़ा गया है।

Tips 2. संयोजक (Conjunctions) दो प्रकार के होते हैं :

1. Co-ordinating Conjunctions (समानपदीय संयोजक)
2. Sub-ordinating Conjunctions (आश्रित संयोजक)

1. Co-ordinating Conjunction : समानपदीय संयोजक वह संयोजक होता है, जिसके द्वारा समान पद वाले शब्द या वाक्य आपस में एक-दूसरे से जोड़े जाते हैं; जैसे :

1. Two *and* two make four.
2. Ram *and* Gopal are friends.

उपर्युक्त वाक्यों में and द्वारा दो शब्दों को जोड़ा गया है।

पुन: निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. He passed *but* his sister failed.
2. Mohan came here *but* Shyam went away.

उपर्युक्त वाक्यों में but द्वारा दो वाक्यों को जोड़ा गया है।

2. Sub-ordinating Conjunction : आश्रित संयोजक वह संयोजक होता है, जो आश्रित उपवाक्य (Sub-ordinate clause) को दूसरे उपवाक्य (Clause) से जोड़ता है; जैसे :

1. *When father came*, I was reading a book.
   (या I was reading a book *when father came*.)
2. *If you work hard*, you will pass.
   (या You will pass *if you work hard*.)

उपर्युक्त वाक्यों में When father came तथा If you work hard से आश्रित उपवाक्य प्रकट होते हैं।

नोट :

(i) Sub-ordinate Clause का प्रथम शब्द (When, if) Sub-ordinating Conjunction होता है।

(ii) उपर्युक्त वाक्यों में When और If आश्रित संयोजक हैं।

Tips 3. अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. He slept *after* he had finished the work.
2. He passed *because* he worked hard.
3. I shall help you *if* you come to me.
4. He said *that* honesty is the best policy.
5. *Though* he was ill, he passed.
6. *Although* you are rich, you are not proud.
7. Wait *till* father comes.
8. He had finished his work *before* he slept.
9. *Unless* you work harder, you will not pass.
10. Do *as* I tell you.
11. *When* he came, I was sleeping.
12. Stay *where* you are.
13. *Since* he was not there, I spoke to his father.
14. The earth is larger *than* the moon.
15. Make hay *while* the sun shines.
16. I do not know *how* it happened.
17. I will stay here *until* you return.

उपर्युक्त वाक्यों में after, because, if, that, though, although, till, before, unless, as, when, where, since, than, while, how, until—Sub-ordinating Conjunctions (आश्रित संयोजक) हैं।

नोट :

(i) उपर्युक्त वाक्यों में Since, as, because का प्रयोग कारण प्रकट करने के लिए हुआ है।

CLICK HERE TO BUY BOOK

Tips 14. यदि Adjective Clause में Relative Pronoun किसी Preposition का Object हो, तो Relative Pronoun को लुप्त करने पर Preposition को Adjective Clause के अन्त में रखते हैं; जैसे :

1. The boy to whom you gave the book hasn't yet returned it.
   (The boy you gave the book *to* hasn't yet returned it.)
2. The man on whom I most depended has cheated me.
   (The man I most depended *on* has cheated me.)
3. The way by which he won the match is a mystery.
   (The way he won the match *by* is a mystery.)

Tips 15. Complex Sentence बनाने के लिए Adverb Clause का भी प्रयोग करते हैं। Adverb Clause बनाने के लिए Sub-ordinating Conjunctions—that, if, when, where, why, because, than, till, until, unless, though, although, after, before, while, since, lest, as soon as, as long as, so long as, in case, even if आदि का प्रयोग किया जाता है।

Tips 16. Adverb Clause के प्रयोग द्वारा दो वाक्यों को मिलाकर एक Complex Sentence बनाया जा सकता है। Complex Sentence बनाने के लिए Sub-ordinating Conjunction का प्रयोग किया जाता है। Adverb Clause of Condition के लिए if, unless, in case का प्रयोग किया जाता है।

अध्याय 23
Determiners

Tips 1. Determiners : Determiner का अर्थ सीमित करने वाला (Fixing word या Restricting Word) है। इसके अन्तर्गत Articles—A, An और The एवं Possessive Adjectives, Adjectives of Number, Adjectives of Quantity, Demonstrative Adjectives आदि का समावेश होता है। जैसे : A, An, The; Some, Any, Much, Several, Few, Little; Each, Every, All, Both, Either, Neither; No, Half; My, Our, Your, Her, Its, Their; This, That, These, Those; Two, Second (and other such numbers) आदि।

Tips 2. 'A' या 'An' और 'The' को सामान्यतया Articles कहा जाता है। वास्तव में ये संकेतवाचक विशेषण हैं। (The Adjectives 'a' or 'an' and 'the' are usually called Articles. They are really Demonstrative Adjectives.)

इस प्रकार स्पष्ट है कि Articles दो प्रकार के होते हैं
(1) Indefinite Article और (2) Definite Article.

Tips 3. जिन Nouns का पहला अक्षर A, E, I, O, U न हो और जिनसे व्यंजन ध्वनि निकले, उनसे पूर्व एक (One) की अंग्रेजी के लिए 'A' का प्रयोग किया जाता है।

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. This is *a* bird.
2. That is *a* horse.
3. This is *a* pen.
4. That is *a* chair.

उपर्युक्त वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि :

(i) Bird, Horse, Pen और Chair सभी Common Nouns हैं। ये जिन प्राणियों या वस्तुओं को बताते हैं, उन्हें गिना जा सकता है अर्थात् ये Countable Nouns हैं।

(ii) ये सभी Nouns एकवचन (Singular Number) के हैं। इन सबका पहला अक्षर व्यंजन (Consonant) से आरम्भ होता है और इनकी ध्वनि व्यंजन भी है।

(iii) इन सबके पहले 'A' का प्रयोग किया गया है।

नोट : *ये सब शब्द एकवचन (Singular Number) के अर्थात् Singular Nouns होने चाहिए।*

Tips 4. जिन शब्दों का पहला अक्षर (Letter) स्वर (A, E, I, O, U में से कोई एक) हो और उनका उच्चारण भी स्वर ध्वनि से हो तो उनसे पहले एक (One) की अंग्रेजी के लिए 'An' का प्रयोग किया जाता है।

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. This is *an* ant.
2. That is *an* elephant.
3. This is *an* inkpot.
4. That is *an* umbrella.
5. This is *an* ox.
6. That is *an* owl.
7. Here is *an* orange.

उपर्युक्त वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि :

(i) Ant, Elephant, Inkpot, Umbrella, Ox, Owl, Orange सभी Common Nouns हैं। ये जिन प्राणियों या वस्तुओं को बताते हैं, उन सबको गिना जा सकता है अर्थात् ये सब Countable Nouns हैं।

(ii) ये सभी Countable Nouns, Singular Number के हैं अर्थात् इन सबका प्रयोग एकवचन में किया गया है।

(iii) इनमें से प्रत्येक का पहला अक्षर स्वर (Vowel) से आरम्भ होता है और इनकी ध्वनि स्वर भी है।

(iv) इन सबसे पहले 'An' का प्रयोग किया गया है।

नोट : *A, E, I, O, U स्वर (Vowel) हैं। इनके अतिरिक्त अंग्रेजी वर्णमाला के शेष सभी अक्षर व्यंजन (Consonants) कहलाते हैं।*

Tips 5. यदि A, E, I, O और U से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उच्चारण व्यंजन ध्वनि से आरम्भ हो, तो इन शब्दों से पहले एक की अंग्रेजी के लिए 'A' का ही प्रयोग किया जाता है।

अब निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. Mr. Singh is a professor in *a university*.
2. Dr. James is *a European*.
3. He is *a one-eyed* man.
4. This is *a useful* book.
5. I have *a one* rupee note in my pocket.

उपर्युक्त वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि :

University, European, One-eyed, Useful से पहले Indefinite Article—A का प्रयोग किया गया है, क्योंकि Vowels आरम्भ होने पर भी इन शब्दों का उच्चारण व्यंजन (Consonant) ध्वनि से आरम्भ होता है।

Tips 6. किसी शब्द के आरम्भ में व्यंजन होने पर भी एक की अंग्रेजी में 'An' का प्रयोग किया जाता है, यदि शब्द का उच्चारण स्वर ध्वनि (Vowel Sound) से हो।

CLICK HERE TO BUY BOOK